सत्र–03 06 अगस्त, 2025

खण्ड– 08 .... बुधवार, ...

अंक– 15 15 श्रावण,1947(शक)

दिल्ली विधान सभा
की
कार्यवाही

आठवीं विधान सभा

तीसरा सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड–08 सत्र–03 में अंक 13 से 17 तक सम्मिलित हैं।)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली–54

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

रंजीत सिंह

सचिव

RANJEET SINGH

Secretary

महेन्द्र गुप्ता

उप सचिव (सम्पादन)

MAHENDRA GUPTA

Deputy Secretary (Editing)

विषय सूची

सत्र–3 बुधवार, 06 अगस्त, 2025 / 15 श्रावण,1947(शक)अंक–15

दिल्ली विधान सभा

क.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	4
2	शोक संवेदना	5
3	श्रद्धांजलि	6
4	विशेष उल्लेख (नियम–280)	10–20
5	फांसी घर पर चर्चा	21–62

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र–3 बुधवार, 06 अगस्त, 2025/15 श्रावण,1947(शक)अंक–15

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए।

क्र.सं.	सदस्य का नाम	क्र.सं.	सदस्य का नाम
1.	श्री अहिर दीपक चौधरी	36.	श्री प्रद्यूम्न सिंह राजपूत
2.	श्री आले मोहम्मद इकबाल	37.	श्री प्रवेश साहिब सिंह
3.	श्री अभय कुमार वर्मा	38.	श्री पवन शर्मा
4.	डॉ. अजय दत्त	39.	श्रीमती पूनम शर्मा
5.	श्री अजय कुमार महावर	40.	श्री प्रवेश रत्न
6.	श्री अनिल झा	41.	श्री प्रेम चौहान
7.	श्री अनिल कुमार शर्मा	42.	श्री पुनरदीप सिंह साहनी
8.	श्री अरविन्दर सिंह लवली	43.	श्री राज करन खत्री
9.	श्री आशीष सूद	44.	श्री राज कुमार भाटिया
10.	श्री अशोक गोयल	45.	श्री राज कुमार चौहान
11.	सुश्री आतिशी	46.	श्री राम सिंह नेताजी
12.	श्री चन्दन कुमार चौधरी	47.	श्री रवि कान्त
13.	चौधरी जुबैर अहमद	48.	श्री रविन्द्र इन्द्राज सिंह
14.	डॉ. अनिल गोयल	49.	श्री रविन्दर सिंह नेगी
15.	श्री गजेन्द्र दराल	50.	श्रीमती रेखा गुप्ता
16.	श्री गजेन्द्र सिंह यादव	51.	श्री सही राम
17.	श्री हरीश खुराना	52.	श्री संदीप सहरावत
18.	श्री इमरान हुसैन	53.	श्री संजय गोयल
19.	श्री जरनैल सिंह	54.	श्री संजीव झा
20.	श्री जितेन्द्र महाजन	55.	श्री सतीश उपाध्याय
21.	श्री कैलाश गहलोत	56.	श्रीमती शिखा रॉय
22.	श्री कैलाश गंगवाल	57.	श्री श्याम शर्मा
23.	श्री कपिल मिश्रा	58.	श्री सोम दत्त
24.	श्री करनैल सिंह	59.	श्री सुरेन्द्र कुमार
25.	श्री करतार सिंह तंवर	60	श्री सूर्य प्रकाश खत्री
26.	श्री कुलदीप कुमार	61	श्री तरविन्दर सिंह मारवाह
27.	श्री कुलदीप सोलंकी	62	श्री तिलक राम गुप्ता
28.	श्री कुलवन्त राणा	63	श्री उमंग बजाज
29.	श्री मनजिंदर सिंह सिरसा	64	श्री वीर सिंह धिंगान
30.	श्री मनोज कुमार शौकीन	65	श्री विजेन्द्र गुप्ता
31.	श्री मोहन सिंह बिष्ट	66	श्री वीरेन्द्र सिंह कादियान
32.	श्री मुकेश कुमार अहलावत		
33.	श्रीमती नीलम पहलवान		
34.	श्री नीरज बैसोया		
35.	श्री पंकज कुमार सिंह		

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

आठवीं विधान सभा, सत्र–3 बुधवार, 06 अगस्त, 2025 /15 श्रावण 1947 (शक्)

सदन अपराह्न 02.04 बजे समवेत हुआ ।

माननीय अध्यक्ष (श्री विजेन्द्र गुप्ता) पीठासीन हुए ।

माननीय अध्यक्ष (श्री विजेन्द्र गुप्ता): सभी को नमस्कार। माननीय सदस्यगण आज उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक आपदा के कारण जान गंवाने वाले लोगों के प्रति शोक संवेदना।

शोक संवेदना

माननीय सदस्यगणों आप सबको ज्ञात होगा कि उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के धराली में कल बादल फटने से भीषण तबाही हुई है। जल–प्रलय से एक पूरा गांव मलबे में दब गया तथा 100 से ज़्यादा लोग लापता है और कम से कम चार लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। कई मकान, होटल और सड़कें भी बाढ़ की चपेट में आ गए हैं। सेना, एनडीआरएफ, एसडीआरए और पुलिस प्रशासन की टीमें राहत और बचाव कार्य के कार्यों में युद्धस्तर पर जुटी हैं। हिमाचल प्रदेश में भी पिछले कई दिनों से बारिश के कहर से कई लोगों की जान जा चुकी है और सड़कें बाधित हो गई हैं तथा जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। आशा है कि राहत और बचाव कार्य से लोगों को मदद मिलेगी और स्थिति सामान्य होगी। मैं अपनी ओर से है तथा सदन की ओर से दोनों राज्यों में प्राकृतिक आपदा से जान गंवाने वाले लोगों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा शोक संतृप्त परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें इस अपार दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। अब दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए दो मिनट का मौन धारण किया जाएगा।

(दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए सदन द्वारा दो मिनट का मौन धारण किया गया।)

माननीय अध्यक्षः ओम शांति, शांति, शांति। सतीश जी आप कुछ कहना चाह रहे थे।

श्रद्धांजलि

श्री सतीश उपाध्यायः अध्यक्ष जी मैं कह रहा था कि सुषमा स्वराज जी जो दिल्ली की मुख्यमंत्री भी रहीं भारतीय राजनीति में बहुत ही प्रेरणादायक शख्सियत थीं और सबसे कम उम्र में उनके राजनीतिक जीवन की शुरूआत 25 वर्ष की उम्र में वो हरियाणा विधानसभा में सबसे युवा कैबिनेट मंत्री भी बनी थीं। भारतीय राजनीति में एक वरिष्ठ नेता के रूप में उन्होंने जिस प्रकार से अपनी छाप छोड़ी थी उसी से आगे चलकर के हरियाणा की अध्यक्ष फिर दिल्ली की पहली मुख्यमंत्री भी बनी और 2014 से 2019 में विदेश मंत्री केन्द्रीय सरकार में बनी और उनकी संवेदनशीलता ऐसी थी कि ट्विटर के माध्यम से जब तमाम भारतीय विदेशों में फंसे थे तो उनको यहां लाने का काम भी सुषमा स्वराज जी ने किया वो चाहे यमन हो, इराक के युद्ध में बंदक बने थे, नेपाल में भूकंप आया था उस समय सबको सुरक्षित लाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। सात बार वो सांसद रहीं और ओजस्वी वक्ता के रूप में चाहे वो संस्कृत भाषा हो, चाहे वो अंग्रेजी हो, चाहे वो हिन्दी हो, चाहे वो पंजाबी हो एक versatile politician के रूप में उन्होंने काम किया और मरणोपरांत 2020 में उनको पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया और हृदय गति रूकने से उनका निधन आज ही के दिन हुआ था। तो मुझे लगता है क्योंकि दिल्ली की मुख्यमंत्री रही हैं आपसे मेरा आग्रह है पूरा देश उनको आज याद कर रहा है। सदन को भी मुख्यमंत्री के रूप में और भारतीय नारी के एक ओजस्वी नेता के रूप में सदन को भी याद करना चाहिये ये में आपको मैन्शन करना चाहता था।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य सतीश उपाध्याय जी ने जो विषय यहां रखा है मैं इस मौके पर सदन की ओर से सदन की संवेदनायें और आज के दिन हम उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुये उनको हमने याद किया और सदन पूर्ण रूप से उनके किये हुये कार्यों की सराहना करते हुये दिल्ली की मुख्यमंत्री के रूप में या फिर केन्द्रीय मंत्री के रूप में हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। साथियो, अभी क्योंकि हमने श्रद्धांजलि अर्पित कर दी है तो बाकी आगे चलकर आपको मैं मौका दूंगा।

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष): अध्यक्ष जी मुझे आप इसमें बोलने देना चाहिये, उत्तराखंड के अंदर यदि इस तरह की त्रासदी हो और।

माननीय अध्यक्षः एक मिनट, एक मिनट बैठिये।

श्री मोहन सिंह बिष्टः कोई मैम्बर उसमें बोलता ना हो।

माननीय अध्यक्षः एक मिनट एक मिनट बैठिये ना, बैठिये, क्योंकि हमारे माननीय उपाध्यक्ष मोहन सिंह बिष्ट जी उत्तराखंड से आते हैं और उनकी अपनी एक संवेदनायें हैं तो मैं एक बार अलग से समय दे रहा हूं वो अपनी बात कहें।

श्री मोहन सिंह बिष्टः आदरणीय अध्यक्ष जी और माननीय सम्मानित सदस्यगण आज इस पवित्र सदन के अन्तर्गत में सदन के माध्यम से एक बात रखना चाहता हूं कि भीषण प्राकृतिक आपदा पर शोक व्यक्त करते हुये मैं उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के कल 5 अगस्त, 2025 को तीन घंटे के अन्तर्गत जिस प्रकार की एक भयावह घटना के साथ त्रासदी घटी जिनमें क्रमशः तीन गांव एक धराली, हर्षिल और सूखी गांव इन तीनों जगह बादल फटने से इतनी बड़ी घटना घट गई कि वहां क्षति के साथ उनका जीवन अस्त–व्यस्त के साथ ये विनाशकारी घटना के साथ निवासियों के साथ इतनी पीड़ा के साथ अकल्पनीय क्षति पहुंची है। अध्यक्ष महोदय बाढ़ आने की वजह से जो निचले स्तर के गांव थे जो नदियों के किनारे बसे हुये गांव थे उन गावों के पास में यदि हम देखेंगे और हमने टी.वी. के माध्यम से देखा होगा हर्षिल गांव में सेना के कैम्प के पास बहने वाली नदी में उफान आ गया और यही नहीं सर वहां जो कैम्प था और उस कैम्प के साथ में जो हैलीपैड बना था वह पहला हैलीपैड भी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। मैं इस बात के साथ मैं एक बात जरूर कहूंगा कि इसकी गंभीरता को देखते हुये मेरे देश के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी और अमित शाह जी ने जिस प्रकार से इसके महत्व को समझते हुये उत्तरकाशी के अंदर धराली गांव की त्रासदी को देखते हुए संवेदना के साथ उन पीड़ितों के लिए जो परिवार उजड़ गए उनको हर संभव उनकी मदद के लिए टीम को बचाव के लिए भेजा, मदद करने की बात कही। वास्तव में अध्यक्ष महोदय, वहां इस प्रकार की त्रासदी थी कि आईटीबीपी की वो तीनों जो टीमें लगी हुई थीं वो तीनों टीमें क्षेत्र में भेजी गईं,

एनडीआरएफ की चार टीमें घटना स्थल पर रवाना की गईं। निश्चित रूप से भारत के प्रधानमंत्री, आदरणीय गृहमंत्री जी ने बचाव कार्य की गंभीरता को देखते हुए 24/7 वहां पर जो मदद करने की बात कही वहां के मुख्यमंत्री धामी जी से उत्तरकाशी के लोगों के लिए टीम और बचाव के लिए इस दुख की घड़ी में कार्य किया। अध्यक्ष महोदय, दिल्ली विधानसभा की ओर से आपने जो शोक संवेदना व्यक्त की उसके लिए तो मैं आपका आभार प्रकट करता हूं और मैं अपनी ओर से और दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करने के लिए शोक संतृप्त परिवारों के लिए असीम दुख सहने के लिए भगवान से यह विनती करता हूं। आपने बोलने का समय दिया बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः अब फांसी घर की प्रमाणिकता के संबंध में चर्चा। हां जी।

श्री कुलदीप कुमारः पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक और सीबू सोरेन जी जो झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री रहे हैं मुझे लगता है कि..।

माननीय अध्यक्षः आप बताईये।

श्री वीरेन्द्र सिंह कादियानः तो उनका भी।

माननीय अध्यक्षः सीबू सोनेन जी का तो कल हो गया था।

श्री वीरेन्द्र सिंह कादियानः सत्यपाल मलिक जी जो पूर्व राज्यपाल।

माननीय अध्यक्षः बाकी जो आप और कहना चाहते हैं।

श्री वीरेन्द्र सिंह कादियानः माननीय अध्यक्ष जी, सत्यपाल मलिक जी जो पूर्व राज्यपाल रहे हैं और राजनीति में बहुत ही लंबा कैरियर रहा है उनका। तो उनको भी हम 4 तारीख को उनका निधन हो गया, स्वर्गवास हो गया तो श्रद्धांजलि देने का।

माननीय अध्यक्षः आप रख दीजिए बात अपनी। श्रद्धांजलि दीजिए आप। अब मैं आपको इजाज़त दे रहा हूं न, आपने विषय रखा आप रख दीजिए। आपने कहा न श्रद्धांजलि, तो आप दे दीजिए। हमारी तरफ से आप बोलिए।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः सत्यपाल मलिक जी जम्मू–कश्मीर के और दो राज्यों के और गवर्ननर रहे हैं। राजनीति में काफी अग्रणी रहे हैं। किसान नेता थे छात्र नेता रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी के सिपाह सालार रहे हैं और अपने समय में राजनीति में बहुत ही तेज–तर्रार, समाज सेवा में उनका बहुत योगदान रहा है। किसानों के उत्थान के लिए उनका बहुत योगदान रहा है। तो ऐसे नेता, जिन्होंने समाज के लिए, किसानों के लिए, छात्र वर्ग के लिए, सभी के लिए अपना जीवन दे दिया आज हमारा दायित्व है कि उनके मरणोप्रांत 4 तारीख को उनका निधन हो गया तो हमें श्रद्धांजलि उनको देनी चाहिए।

माननीय अध्यक्षः मैं वीरेन्द्र कादियान जी ने जो यहां।

श्री आले मोहम्मद इकबालः अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः हां। माइक ऑन कर दीजिए। कादियान जी का माइक बंद कर दीजिए आले मोहम्मद जी का माइक खोल दीजिए।

श्री आले मोहम्मद इकबालः अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से ये कहना चाहता हूं कि बैल हुई, कोरम पूरा होता है, उसके बाद जब आप पधारते हैं तो उसके बाद महज 52 सेकेंड का राष्ट्रीय गान अगर डेली हो जाया करे तो एक परंपरा वो मेरा एक मश्विरा है कि महज 52 सेकेंड का रहता है और आजादी का महीना है ये हमारा अगस्त का महीना है और 9 दिन बाद पूरा राष्ट्र 79 अपना आजादी का महोत्सव मना रहे हैं। तो मेरी आपसे बस ये विनती है बाकी आपके ऊपर है सदन जिस तरीके से कहे। तो एक होता है एक जोश एक वलवला आता है तमाम सदस्यों में उसका आगाज हमारा हर दिन का प्रोसीजर जो हो राष्ट्रगान से उसका आगाज हो, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः क्योंकि ये जो परंपराएं हैं, जो व्यवस्थाएं हैं और जो एक सम्मान है वो हमको बनाकर रखना है। राष्ट्रगान, राष्ट्रीय गीत हो उसके लिए बैंड आता है और सदन का जब सत्र शुरु होता है और जब समाप्त होता है तब ये यहां पर राष्ट्रगान होता है, राष्ट्रीय गीत होता है। तो मैं सदस्य की भावना से पूरी तरह से उनका सम्मान करते हुए और उनके द्वारा दी गई राय पर एक संवैधानिक व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए हमें संविधान के नियमों का इस सदन में पालन करना है और देश में और संसद में

जो संवैधानिक व्यवस्थाएं है उसी के अनुसार हमको चलना है। मैं आपके भावनाओं की कद्र करता हूं और सम्मान करता हूं। अब दिल्ली विधानसभा परिसर में 9 अगस्त, 2022 को उद्घाटन किए गए फांसी घर की प्रमाणिकता के संबंध में 05 अगस्त, 2025 को शुरू की गई चर्चा में सदस्य भाग लेंगे। माननीय सदस्य श्री सूर्य प्रकाश जी। मैं विपक्ष के भी अपने साथियों से कहूंगा कि वो नाम भेज दें।

श्री अभय वर्माः अध्यक्ष जी, यह बहुत यह बड़ा विषय है और कल आपके चेयर से माननीय नेता, प्रतिपक्ष से आग्रह किया गया था कि जो भी सामग्री है वह लेकर आएं और मुझे लग रहा है कि अभी तक नेता, प्रतिपक्ष जी आई नहीं है।

माननीय अध्यक्षः नहीं वो ऐसा है कि बिना उनके बयान के हम आगे नहीं बढ़ेंगे, तो हम उनका इंतज़ार करेंगे।

श्री अभय वर्माः अध्यक्ष जी तो अभी अभी 280 ले लेते हैं थोड़ा समय।

माननीय अध्यक्षः अभी एक बार तब शुरू हो गया तो।

श्री अभय वर्माः हॉ ठीक है।

......व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः 280 पहले ले लें ।

श्री अभय वर्माः पहले ले लेंगे तो

माननीय अध्यक्षः चलिए ठीक है।

श्री अभय वर्माः नेता, प्रतिपक्ष भी आ जाएंगी फिर विषय चल जाएगा।

माननीय अध्यक्षः चलिए ठीक है। अब पहले 280 ले लेते हैं। अब निम्नलिखित सदस्यों द्वारा विशेष उल्लेख के मामले उठाए जाएंगे। माननीय सदस्य श्री सतीश उपाध्याय।

विशेष उल्लेख(नियम–280)

श्री सतीश उपाध्यायः धन्यवाद अध्यक्ष जी, मैं अपनी मालवीय नगर विधानसभा में विशेष करके आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं वरिष्ठ नागरिकों, विधवाओं, आर्थिक रूप से कमज़ोर बुजुर्गों की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के लाभ समय पर न मिलने पर उसके

लिए आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। वृद्धावस्था पेंशन, वरिष्ठ नागरिक अनुदान, विधवा पेंशन इन ज़रूरतमंद नागरिकों के लिए जीवन रेखा है। शायद ही हम उनकी भावना को समझें जो लोग वरिष्ठ नागरिक हैं। ये जो पेंशन उनको मिलती है, ये पेंशन उनके जीवन की छोटी–छोटी ज़रूरतें, उनके जीवन की छोटी–छोटी खुशियों को पूरा करने में बहुत बड़ा महत्वपूर्ण योगदान देती हैं और उनको लगता है कि 80 साल 85 साल 90 साल के बाद यह जो सरकार उनको पैसा देती है उससे वो छोटी–छोटी खुशियों को लेकर के जा सकते हैं। लेकिन काफी समय से यह समस्या अभी तक इसका समाधान नहीं हो पाया है। कई लाभार्थियों को महीनों से पेंशन नहीं मिली है। नए आवेदनों की प्रक्रिया भी काफी लंबे समय से लंबित है। सत्यापन, बैंक संबंधी त्रुटियां, तकनीकी समस्याएं यह आम बात है। कई बुजुर्ग महिला लाभार्थी विधवा पेंशन हेतु वर्षों से आवेदन करने के बाद भी आज भी वह प्रतीक्षा कर रहे हैं। इन कारणों से मालवीय नगर विधानसभा में सैकड़ों परिवार आर्थिक और मानसिक रूप से परेशान हैं। अतः मैं चाहता हूं कि सरकार निम्नलिखित बिंदुओं पर निश्चित रूप से ध्यान दें कि दिल्ली में वर्तमान वृद्धावस्था पेंशन, वरिष्ठ नागरिक अनुदान एवं विधवा पेंशन योजनाओं के कितने सक्रिय लाभार्थी हैं और इसके साथ ही कुल कितने आवेदन अभी तक लंबित है और उनमें स्वीकृति में देरी का कारण क्या है जिन लाभार्थियों की पेंशन रूक गई है, पुनर्स्थापना के लिए क्या–क्या प्रक्रिया अपनाई जा रही है? क्या सरकार इन योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए विशेष प्रकार के शिविर, जनसहयोग केंद्र या स्थानीय स्तर पर हैल्प डेस्क की व्यवस्था कर रही है। मुझे लगता है कि बहुत ज़रूरी चीज़ है। हज़ारों फोन जब से हम चुनकर आये है, हमारे पास आए हैं। इसमें लगातार किस तरह की देरी है इसको शीघ्र ही इस समस्या का समाधान किया जाना चाहिए। आपने 280 के तहत मुझे बोलने का अवसर दिया। मैं हृदय से आपका धन्यवाद व्यक्त करता हूं।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्रीमती पूनम शर्मा जी।

श्रीमती पूनम शर्माः धन्यवाद अध्यक्ष जी, मैं आपका ध्यान अपने वजीरपुर विधानसभा की तरफ दिलाना चाहती हूं, जहां हज़ारों बुज़ुर्ग, मेरी महिला और पुरुष जो पेंशनधारी हैं, उनको काफी टाइम से पेंशन नहीं मिल रही है। कई वरिष्ठों की तो मैं कहूं कि पेंशन बिना किसी स्पष्टीकरण के कारण बंद कर दी गई है। काफी जो वृद्ध हैं उनकी भी नई

पेंशन अभी तक लागू नहीं हुई है और जो पेंशन थी वो जो पुरानी योजनाएं थी वह भी किस कारण से बंद हुई है उसका भी जवाब दिया जाए क्योंकि सुबह से शाम तक हज़ारों ऐसे लोग आते हैं जो मैं कहूं कि जिनकी जीविका ही खाली पेंशन से चलती है। बुजुर्ग माताओं और पिताओं की सुबह से शाम तक बेचारे 80, 80 साल के बुज़ुर्ग ऑफिस में आकर पूछते हैं कि बिटिया हमारी पेंशन कब से लागू हो जाएगी। तो मैं आपके माध्यम से कह रही हूं प्लीज इस योजना को तुरंत चालू करवाए जाए और जो पुरानी काफी टाइम से बंद है उसको भी शुरू करा जाए और नई पेंशन भी स्टार्ट की जाए। आपने बोलने का मौका दिया उसके लिए तहे दिल से धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री संदीप सहरावत जी।

श्री संदीप सहरावतः धन्यवाद अध्यक्ष जी । मैं आपका ध्यान हमारी विधानसभा मटियाला में जो बहुत सारे जोहड़ है जिनको तालाब बोला जाता है उनकी और आकर्षित करना चाहता हूं। क्योंकि वो जोहड़ जो हमारी सांस्कृतिक विरासत थे, आज उन जोहडों में नालों का पानी छोड़ा गया है। क्योंकि पिछली सरकार जो रही ऐसा ही एक विषय हमारे यहां पर दीनपूर का एक जोहड़ है जी, जिसमें पीडब्ल्यूडी का नाला उसमें कॉनेक्ट करा हुआ है और वो जब जोहड़ में पूरे नाले का पानी उसे जोहड़ में जाता है। इसी तरह एक पंडवाला खुर्द है, जिसमें पिछले साल एक पांच साल के बच्चे की मृत्यु हो गई और सांप के काटने से उसकी मृत्यु हो गई क्योंकि वहां पर बहुत ज़्यादा ग्रीनरी जंगल इस तरह की चीज़ हो गई है। तो मेरा निवेदन यही है कि इन जोहड़ो को जीवित किया जाए। उनका अलग से बजट का प्रावधान किया जाए। इसी तरह झुलझूली का एक जोहड़ है जी झुलझुली गांव में जिसमें अभी वर्तमान में बहुत सारी मछलियां थी और वो सारी मछलियां मर गई, क्योंकि वहां पर नाले का पानी जाता है। तो मेरा निवेदन ये है कि इन जोहड़ो का विकास कैसे हो उनका अलग से बजट तय हो ताकि उन जोहड़ो की बाउंड्री वॉल हो और उस पर ट्रैक लगे और उनका सौंदर्यीकरण हो धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री कुलदीप कुमार जी।

श्री कुलदीप कुमार : धन्यवाद अध्यक्ष जी। अध्यक्ष जी मेरी विधानसभा के अंदर गाजीपुर में एक स्लॉटर हाउस है और पूरी दिल्ली में वह एक स्लॉटर हाउस है जो मेरी विधानसभा के अंतर्गत पड़ता है। अध्यक्ष जी मेरे ध्यान में लाया गया है कि ये गाजीपुर स्थित जो

बूचड़खाना है इसके आसपास के क्षेत्रों में गंभीर जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली स्वास्थ्य संबंधी जो ये गैस है ये यहां से निकल रही है और लगातार अध्यक्ष जी इसके अंदर जो इसके अपशिष्ट पदार्थ हैं वो भी रोड पे लगातार फेंके जा रहे हैं और मैं कई बार इसके लिए पत्र भी लिख चुका हूं, लेकिन कोई उस पर अभी तक कोई कार्यवाही ऐसी हुई नहीं है और शाम के समय तो अध्यक्ष जी करेक्ट शाम को सात बजे पूरी विधानसभा क्षेत्र के अंदर, मेरे चाहे वो हो कोंडली हो, गाजीपुर हो, चाहे वो राजवीर कालोनी हो, चाहे वो डीडीए फ्लैट्स हों, सब में लोगों का जो वहां बाहर निकलना बड़ा दूर्भर होता है और पूरे के पूरे जो उसका बदबू है वो शाम को सात बजे के बाद सारे के सारे घरों में जाने का काम करती है और हमारे क्षेत्र के लोगों का बहुत जीना दूर्भर हो चुका है। तो मेरा आपसे निवेदन है, प्रार्थना है, अध्यक्ष जी कि इसपे तुरंत प्रभाव में कार्रवाई की जाए। मैं पर्यावरण मंत्री से भी, स्वास्थ्य मंत्री से भी, यह आग्रह करूंगा कि आप इस पर तुरंत प्रभाव में कार्रवाई करें ताकि जो हमारे क्षेत्र के लोगों को, विधानसभा के लोगों को, इससे निकलने वाली गैस से और इसके निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों से, जो रोड के पास और हिंडन नहर के बगल में फेंके जा रहे हैं बड़ी संख्या में, उसपर रोक लगायी जा सके और ये इसमें अवैध रूप से जो काम हो रहा है उसको बंद कराने की कृपा करें बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री चंदन कुमार चौधरी जी।

श्री चंदन कुमार चौधरी : धन्यवाद अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि संगम विहार विधानसभा में लगभग सात से आठ लाख की आबादी है, जिसका निकलने का कोई भी साधन नहीं है। छोटी सी गलियां हैं, छोटे से रोड हैं और उसमें भी एंक्रोचमेंट भरा हुआ है। पिछली सरकार के द्वारा और वहां के विधायक के द्वारा संगम विहार विधानसभा को बिलकुल नरक में धकेलने का काम किया है और एक शूटिंग रेंज रोड है जो संगम विहार की आवाजाही के लिए है एक मंगल बाज़ार रोड है और एक रतिया मार्ग रोड है, तीनों रोडों पर बिलकुल एंक्रोचमेंट करके इन्होंने आवाजाही को बिलकुल बाधित करने का प्रयास किया है और बिल्कुल बाधित कर दिया है। जहां पर सीवर डलना चाहिए, जहां पर पानी की लाइन डलनी चाहिए, वहां पर उन्होंने फॉरेस्ट घोषित करवा दिया। और मंत्री जी के माध्यम

से मैं इस सदन से आपके माध्यम से आग्रह करना चाहता हूं मंत्री जी से कि जल्द से जल्द या तो डिपार्टमेंट के द्वारा एफिडेविट लिया जाए या फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के द्वारा एनओसी देकर के सीवर की लाइन बिछायी जाए और पानी की लाइन बिछायी जाए। आवाजाही के लिए आपके माध्यम से यह मंत्री जी से मैं पूछना चाहता हूं कि जो भी सिजरा रोड है, तीनों रोडों का एक डायमेंशन पता चले, कितना रोड है और डायमेंशन पता चलने के बाद वहां से एंक्रोचमेंट हटाने का प्रयास किया जाए। मंत्री जी के द्वारा एक और मैं आग्रह करना चाहता हूं कि हमारे विधानसभा के अंदर पिछली सरकार के द्वारा छह से सात करोड़ का बजट लगाकर के अंडरग्राउंड पाइपलाइन डालने का, पानी का पाइपलाइन डालने का एक प्रावधान उन्होंने किया था, जो कि जल बोर्ड ने हैंडिंग ओवर देने का प्रयास किया, लेकिन दूसरे डिपार्टमेंट ने जो सिविल डिपार्टमेंट है उन्होंने हैंडिंग ओवर लेने से मना कर दिया, इसलिए मना कर दिया कि ना तो कहीं ज्वाइंट है, ना कहीं पाईप है तो ये इतना बड़ा घोटाला है 7 से 8 करोड़ का और जब मैंने कहा कि उसमें पानी छोड़िये तो वहां के एक्सईएन ने कहा कि ये तो पाईप लाइन ही नहीं है। यदि मैं खुदवाता हूं तो कहीं पाईप लाइन नहीं है, कहीं ज्वाइंट नहीं है, तो कहां से पानी भेजा जाए और कैसे पानी हम उसमें पब्लिक को पिलाएं। तो आपके माध्यम से मैं आग्रह करना चाहता हूं मंत्री जी से कि इसमें जल्द से जल्द संज्ञान लेकर के उचित कार्रवाई हो और जो एग्जीक्यूटिव इंजीनियर इस प्रोजेक्ट को चला रहा था, इस प्रोजेक्ट को कर रहा था उस पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई किया जाए। हर घर में नल से जल की योजना प्रधानमंत्री जी के द्वारा पूरे देश में लागू हो चुका है, लेकिन पिछली सरकार के द्वारा दिल्ली में लागू नहीं होने दिया गया, लेकिन अब हमारी सरकार है तो हम आपके माध्यम से मंत्री जी से आग्रह करते हैं कि संगम विहार एक ऐसी विधानसभा है जहां कि सबसे ज़्यादा पानी की किल्लत है, वहां हाहाकार है, ना तो गंदे पानी की निकासी हो पाती है, ना पीने के पानी मिलते हैं, लेकिन चार से पांच महीने में मंत्री जी के द्वारा बहुत सारी चीज़ों को सुदृढ़ किया गया है। आने वाले समय में भी उसको सुदृढ़ किया जाएगा। तो आपके माध्यम से मैं सिरसा जी से और प्रवेश जी से आग्रह करता हूं कि जल्द से जल्द फॉरेस्ट के द्वारा एनओएसी मिले और उस पर सुचारू ढंग से पानी की व्यवस्था हो और सीवर की व्यवस्था हो। बहुत बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्ष : माननीय चीफ व्हिप श्री अभय कुमार वर्मा जी।

श्री अभय वर्मा : मैं पहले दिन नहीं आया था धन्यवाद अध्यक्ष जी मैं आपके माध्यम से लोक निर्माण विभाग मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, मेरे विधानसभा क्षेत्र में तीन पीडब्ल्यूडी के रोड हैं एक विकास मार्ग है, एक मदर डेयरी रोड है, एक पटपड़गंज रोड है। इन तीनों रोड पर दो–ढाई साल पहले नगर निगम ने बड़े–बड़े लोहे के डस्टबिन रख दिए। उससे पहले प्रधानमंत्री स्वच्छता अभियान के तहत दिल्ली में लगभग 500 ढलाव घर में कॉम्पेक्टर मशीन लगाए गए। ऐसे ही मेरे विधानसभा में सात ढलाव घर को समाप्त कर छह स्थानों पर कॉम्पेक्टर मशीन लगाया गया।

कंपैक्टर मशीन लगाते वक्त यह कहा गया कि अब कूड़ा दिखेगा नहीं। गलियों से, घरों से कूड़ा उठेगा और सीधे कंपैक्टर मशीन में जाएगा उसको कम्प्रैस करके उसको फिर उचित स्थान पर भेजा जाएगा। लेकिन अध्यक्ष जी मेट्रो वेस्ट जो एक प्राईवेट एजेंसी है जिसने कूड़ा उठाने का ठेका लिया हुआ है एमसीडी से उनका जो कूड़े घर में कूड़ा बीनने का जो काम चलता था वह बंद हो गया क्योंकि कंपैक्टर मशीन लगने से वह कूड़ा गाड़ी से सीधे कंपैक्टर मशीन में और फिर सीधे उचित स्थान पर फेंकने का काम शुरू हो गया तो उन्होंने बीच से एक रास्ता निकाला। उन्होंने क्या किया गलियों के बाहर यह पीडब्ल्यूडी के रोड़ों पर बड़े बड़े लोहे के डस्टबिन रख दिए कि और उस डस्टबिन में छोटी गाड़ियां आकर कूड़ा डालती है, कुछ कूड़ा डस्टबिन के अंदर जाता है कुछ कूड़ा रोड़ पर गिरता है और कूड़ा बीनने वाले वहां कूड़ा बीनते हैं और पूरा माहौल पीडब्ल्यूडी के रोड़ का खराब हो जाता है। अब देखिए केवल कूड़ा के प्रबंधन का विषय नहीं है माननीय पर्यावरण मंत्री जी भी आए हैं, पॉल्यूशन भी एक बहुत बड़ा कारण है क्योंकि वह डस्ट बनकर हवा में उड़ता है और इससे पॉल्यूशन भी बढ़ता है। तो मैं आपके माध्यम से माननीय पीडब्ल्यूडी मिनिस्टर, माननीय पर्यावरण मिनिस्टर, माननीय शहरी विकास मंत्री जी इन सब से आग्रह करूंगा कि इसके लिए एक कंपोजिट फॉर्मूला बने और जिस आशय से कंपैक्टर की स्थापना दिल्ली में की गई थी कि कूड़ा नहीं दिखेगा उस पर कोई ना कोई नीतिगत योजना बनाकर इसको इंप्लीमेंट करना चाहिए और यह विषय सिर्फ मेरे विधानसभा से जुड़ा हुआ नहीं है, कई बार मैं गाड़ी से जाता हूं तो डस्टबिन के कारण रोड़ छोटी

हो जाती है और ट्रैफिक जैम भी लगता है और बड़े बड़े मार्किट्स के बाहर वह डस्टबिन बड़ा सा लोहे का डस्टबिन रखा हुआ है, स्थान तो घिरता ही है, गंदगी भी फैली होती है। तो निश्चित रूप से एक यह नीतिगत मामला है इस पर सरकार को विचार करके कोई नीति बनाना चाहिए और मेट्रो वेस्ट के साथ जो समझौता हुआ था कि कूड़ा घर से उठाकर कॉम्पैक्टर में डालेंगे उसका अनुपालन होना चाहिए। बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री कैलाश गंगवाल जी।

श्री कैलाश गंगवालः धन्यवाद अध्यक्ष जी, मैं आपका ध्यान हमारी विधानसभा मादीपुर और पूरी दिल्ली का विषय है उसकी ओर दिलाना चाहता हूँ कि महोदय, दिल्ली में अवैध घुसपैठ प्राचीन समय से ही हो रही है लेकिन उस समय जो लोग आते थे थोड़ा प्यार से रहते थे लेकिन आज जो लोग दिल्ली में जबरन प्रवेश कर रहे हैं, चोरी छिपे वारदातों को अंजाम दे रहे हैं, यह लोग देश के लिए खतरा हैं, दिल्ली के लिए खतरा है। दिल्ली की जनसंख्या बड़ी तेजी से बढ़ती जा रही है इसमें सबसे ज़्यादा बांग्लादेशी, रोहिंग्या जो कि लाखों की संख्या में है, इन्होंने बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों के रोज़गार पर क़ब्ज़ा कर रखा है और क्षेत्रों के अंदर चोरी चकारी, मैं जब अपनी विधानसभा में देखता हूं कभी किसी को चाकू मार दिया और भाग जाते हैं, फरार हो जाते हैं और यह अपने रियल नेम से नहीं रहते कुछ और नेम उन्होंने चेंज कर रखे हैं, उन नामों से रहते पप्पू राजू किसी भी नाम से। उनकी वजह से दिल्ली के मूल निवासियों को बड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा इन सभी के आधार कार्ड, वोटर कार्ड, राशन कार्ड बना दिए गए हैं अब यह लोग दिल्ली की राजनीति को भी प्रभावित कर रहे हैं। यह लोग शरणार्थी हैं, घुसपैठिए हैं, इनका आधार कार्ड, वोटर कार्ड किसी भी प्रकार से नहीं बन सकता, फिर भी ना जाने कौन सी एजेंसियों की सहायता से ये लोग कर रहे हैं, यह सरासर देशद्रोह है। महोदय यह बड़ी गंभीरता का विषय है इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। स्थानीय लोगों को मिलने वाली सुख सुविधाओं का लाभ भी उठाते हैं, यह लोग दिल्ली के वोटर बने हुए हैं। महोदय मेरा सरकार से अनुरोध है कि जांच एजेंसियों से इनकी जांच करायी जाए जिन्होंने इनके आधार कार्ड, वोटर कार्ड बनाया है उन पर देशद्रोह का मुकदमा दर्ज किया जाए, घुसपैठियों को उनके देश वापस भेजा

जाए जिससे कि हमारी दिल्ली साफ सुथरी रहे। जो चोरी चकारी हो रही है, चाकू छोटे छोटे आप देखोगे झुग्गी वाले एरिये में यह रहते हैं और चाकू किसी को भी मार के भाग जाते हैं। मेरा रघुबीर नगर क्षेत्र मादीपुर विधान सभा में इस तरह कई लोग हैं। पीछे 857 रघुबीर नगर, आर ब्लाक के अंदर भी चार पांच रोहिंग्या पकड़े गए थे और जब इनके स्थानों पर हम टारगेट करते हैं तो किराए पर रहते हैं और दूसरे दिन भाग जाते हैं जब उनको पता लगता है कि हमारे यहां आ रहे हैं। तो इनके ऊपर कार्रवाई करें धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री आले मोहम्मद।

श्री आले मोहम्मदः धन्यवाद अध्यक्ष जी। स्पीकर सर, मैं एक अहम् मुद्दे की तरफ आपको ले जाना चाह रहा हूं। स्पीकर साहब, यह मुद्दा दिल्ली में जो तमाम हर चौथे और पांचवा आदमी इससे जूझ रहा है और मैं समझता हूं कि सिर्फ पुरानी दिल्ली या मेरी विधानसभा का यह मुद्दा नहीं है, 70 की 70 विधानसभा का यह मुद्दा है। अध्यक्ष जी एक बंदा कोई बिल्डिंग बनाता है, बिल्डर बिल्डिंग बनाके चला जाता है। आम नागरिक वह बिल्डिंग में जब फ्लैट लेता है चाहे वह 40 गज का हो, 50 गज का हो, एमसीडी के अंदर वह बिल्डिंग बुक हो जाती है। उसके पास इंटरनेट का कनेक्शन मिल जाता है, वाईफाई का कनेक्शन उसके पास है, पानी का कनेक्शन उसके पास है, टीवी का कनेक्शन उसके पास है, सीवर का कनेक्शन उसके पास है मगर नहीं है तो उसके पास बिजली नहीं है, उसका मीटर नहीं लगता। जब एमसीडी में बिल्डिंग बुक हो जाती है अध्यक्ष जी क्योंकि मैं दिल्ली का डिप्टी मेयर रहा पिछले दो साल और मैं सबसे ज्यादा क्योंकि मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं कि ये मेरी विधान सभा का नहीं क्योंकि 70 की 70 विधान सभा का आदमी मेरे डिप्टी मेयर ऑफिस में एमसीडी–सिविक सेंटर में आया, चाहे वो आप का हो, मैं इसलिए आज माननीय मुख्यमंत्री जी से भी और पावर मिनिस्टर साहब अभी है नहीं, मगर मैं आपके दोनों के माध्यम से गुजारिश करना चाहता हूं कि कोई पॉलिसी बनाए कि टेम्परेरी मीटर दिया जाए क्योंकि सारे कनेक्शन उसके पास है मगर नहीं है और इससे आप भी क्योंकि एक स्पीकर से पहले आप एक विधायक हैं, मुख्यमंत्री जी भी, जितने केबिनेट के मिनिस्टर हैं, यहां हम 70 जितने के विधायक हैं सबसे बड़ी हमारी आसानी हो जाएगी, हमारे ऑफिस में अगर दो सौ लोग आते हैं तो पचास लोग इस चीज से जूझ रहे हैं कि उनके पास मीटर नहीं है।

तो मेरी आपसे गुजारिश है कि डिस्काम के साथ बैठकर पावर मिनिस्ट साहब एक बैठक करें और कोई इस पर फ़ैसला लिया जाए। दिल्ली के अंदर अध्यक्ष जी तीन, टाटा पावर, राजधानी और यमुना ये तीन पावर कंपनिज ऐसी हैं जो एमसीडी के पास भेजती है कि एनओसी लेकर आओ, एमसीडी कहता है कि हमारे पास नहीं बिजली वालों के पास जाओ, फायर की एनओसी लाओ, इसी एनओसी में वो जा रहा है। मगर जो मालदार है, जो पैसे वाला है वो किसी भी तरीके से अपना जुगाड़ करके मीटर लगवा लेता है मगर आम आदमी और गरीब मीटर नहीं लगवा पाता। मेरी गुजारिश रहेगी सरकार से और मुख्यमंत्री जी से खास तौर पर इस पर कोई पॉलिसी मेकिंग मैटर्स को लेकर आए और जल्द से जल्द क्योंकि सिर्फ एक विधान सभा का मैटर नहीं है, 70 की 70 विधान सभा में है कि उस इंसान को मीटर दिया जाए जो गरीब आदमी बगैर बिजली के रह रहा है। फिर मजबूरी वो आस पड़ोस से कहीं से बिजली लेता है तो बीएसईएस का एनफोर्समेंट डिपार्टमेंट वहां जाता है और छापा मारता है, जिसके घर में पच्चीस हज़ार रुपए नहीं है उसका दो दो लाख रुपए का एनफोर्समेंट का केस आता है। हर विधायक इस परेशानी से जूझ रहा है और खास तौर पर मैं अगर अपनी पुरानी दिल्ली की बात करूं तो वो भी जूझ रहा है कि उनके लिए कोई पॉलिस मेकिंग एक मैटर मुख्यमंत्री साहब और पावर मिनिस्टर इस पर बैठकर इस पर कोई पॉलिसी बनाकर उनको टेम्परेरी मीटर दिया जाए। मेरी बस आपसे ये ही गुजारिश है। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय उपाध्यक्ष– श्री मोहन सिंह बिष्ट जी।

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष): आदरणीय अध्यक्ष जी, नियम 280 के तहत आपने मुझे अपनी विधान सभा मुस्तफाबाद की एक बहुत ही गंभीर समस्या की ओर अपनी बात रखने का मौका दिया उसके लिए मैं आभार प्रकट करता हूं। अध्यक्ष महोदय, वास्तव में यह सत्यता है कि जिस विधान सभा क्षेत्र से मैं जीत करके आया हूं वह क्षेत्र घनी आबादी वाला क्षेत्र है और वहां पर अधिकतर गरीब परिवार के लोग रहते हैं। अध्यक्ष जी, यह भी सत्य है कि गरीब परिवार के लोग या तो पचास गज के प्लॉट में रहते हैं या साठ गज के प्लॉट में रहते हैं और सौ गज के प्लॉट में भी वो रहते हैं लेकिन उस क्षेत्र के अंतर्गत बिल्डरों द्वारा एक से लेकर के छह मंजिले भवन

का निर्माण कर दिया गया है। अध्यक्ष जी यह भी सत्य है कि बुनियादी जरूरतों को ध्यान में नहीं रखा गया, न हीं बिल्डिंग बाय–लॉज को ध्यान में रखा गया। अध्यक्ष महोदय, इन गली, इन क्षेत्रों के अंदर लोगों को 10 फीट हो, 12 फीट हो, 15 फीट की गलियां हो, यहां से वो उनका आना जाना लगा रहता है, चौड़ी रोडों का भी अभाव है।

अध्यक्ष महोदय, यह भी सत्य है जब मैंने पिछले दिनों के अंदर विधान सभा में इस आवाज़ को उठाया था तो उसके थोड़े दिनों के बाद वहां पर एक 5 मंजिला बिल्डिंग क्रश हो गई और जब वो बिल्डिंग क्रैश हुई तो सर वहां 11–12 लोगों की जीवन लीला समाप्त हो गई।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से इस सदन के अंदर शहरी विकास मंत्री से भी यह बात रखना चाहता हूं कि पांच मंजिला, छह मंजिला जितने भी मकान चाहे वो 10 फीट की गली में हो, 12 फीट की गली में हो, 15 फीट की गली में हो, उनको तुरंत सील कर दिया जाए। अध्यक्ष महोदय, ये यहां पर जो सील करने का मतलब ये है कि वहां अंडरग्राउंड पार्किंग भी बना दी है, उसके अंदर फैक्टरी वगैरह भी लगा दी है जिसमें बिल्डिंग बाय–लॉज का ध्यान तो रखा नहीं गया लेकिन उनकी हालत अत्यंत खराब है। अध्यक्ष महोदय, पिछले दिनों के अंदर दिल्ली नगर निगम द्वारा इस पर कार्रवाई तो जरूर की गई लेकिन हुआ क्या कि उनके नीचे जो दुकान बनी थी वो दुकानों को सील कर दिया लेकिन बिजली के कनेक्शन नहीं काटे, पानी के कनेक्शन काटे नहीं, उनकी हालत ये है कि कभी भी यदि भूकंप आ गया, तो निश्चित रूप से बहुत सारी ऐसी दुर्घटना घट सकती है। मुझे तो ये लगता है अध्यक्ष महोदय कि जिस प्रकार से उन बिल्डिंगों को सील किया गया और सील करने के बाद उनमें बिजली के कनैक्शन नहीं काटे गए तो उससे लगता है कि कहीं ना कहीं भ्रष्टाचार में लिप्त है इसलिए बिजली के कनैक्शन नहीं काटे गए। माननीय अध्यक्ष जी मेरा आपसे निवेदन है, इस सदन से एक प्रस्ताव के साथ, एक ऐसी आवाज जानी चाहिए कि जब नगर निगम उन क्षेत्रों को या उन बिल्डिंग को सील करता है तो सबसे पहले बिजली के कनैक्शन कटे, पानी के कनैक्शन कटे और जिससे कि उन बिल्डिंगों को

वास्तव में उसमें कार्रवाई का लाभ वहां की जनता को मिल सके, आपने मुझे अपनी बात रखने का मौका दिया आपका बहुत–बहुत धन्यवाद, नमस्कार।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री वीर सिंह धींगान जी।

श्री वीर सिंह धींगानः आदरणीय अध्यक्ष जी, पहले तो मैं आपका धन्यवाद ही कर दूं कि आपने एक ऐसे महत्वपूर्ण सवाल पर मुझे बोलने का अवसर दिया जिसकी पूरे यमुनापार को बहुत जरूरत है। अध्यक्ष जी मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान यमुनापार के सबसे बड़े जीटीबी अस्पताल की ओर दिलाना चाहता हूं जो कि सिख समुदाय के नौंवे गुरू गुरू तेग बहादुर सिंह के नाम से जाना जाता है। अध्यक्ष जी अस्पताल कहने के लिए बहुत बड़ा है, यमुनापार का बहुत बड़ी आबादी है। इसके बाद मैं बताना चाहता हूं अध्यक्ष जी अभी हाल में सरकार बनने के तुरंत बाद माननीय मुख्यमंत्री जी ने उक्त अस्पताल का दौरा किया था पहले सप्ताह में ही। हमें ऐसा लगा कि सारा तामझाम जो बिगड़ा हुआ है या जो कमियॉं हैं अस्पताल में डॉक्टरों की, दवाइयों की, नर्सों की शायद उसके बारे में माननीय मुख्यमंत्री जी कुछ करके जाएंगी। महोदय जी अत्यंत खेद का विषय है उसके बावजूद भी माननीय मुख्यमंत्री जी के दौरे के बाद भी अस्पताल का हाल जस का तस है। उसमें कोई नई सुविधा लागू नहीं हुई, कोई नई घोषणा नहीं हुई। अध्यक्ष जी उक्त अस्पताल की रोजाना की जो ओपीडी है वो लगभग 3,500 के आसपास है। इस अस्पताल में दिल्ली के ही नहीं बल्कि उत्तर भारत के भी दो सौ, दो सौ किलोमीटर दूर से मरीज आते हैं और आप जानते ही हैं कि सरकारी अस्पतालों में बड़े–बड़े लोग नहीं जाते, गरीब और मध्यम वर्ग के लोग ही सरकारी अस्पतालों का सहारा लेते हैं। अध्यक्ष जी 3,500 की ओपीडी के अलावा करीब दो हजार बैड जो हर वक्त इस अस्पताल में मरीजों से भरे रहते है, उक्त अस्पताल में डॉक्टरों सहित, नर्स, पैरामैडिकल स्टाफ आदि कर्मचारियों की भारी कमी है तथा बड़े खेद का विषय है कि उक्त अस्पताल में इतनी बड़ी ओपीडी होने के साथ–साथ रोजाना दो हजार बैडों का भरा रहना उसके बाद एक एमआरआई मशीन तक इस अस्पताल में नहीं है। अध्यक्ष जी कई बार इस टैस्ट की वजह से मरीजों का इलाज बहुत देरी से शुरू होता है और कईयों को तो बाहर भेजना पड़ता है दूसरे अस्पतालों में। कई बार ऐसे भी हुआ है कि टैस्ट कराने में ही कई बार

मरीजों की जान चली जाती है, उससे बहुत बड़ी दुखद बात है कि इतना बड़ा अस्पताल होने के बाद उसमें एक छोटी सी एमआरआई मशीन नहीं है।

(समय की घंटी)

श्री वीर सिंह धींगानः अध्यक्ष महोदय जी अकेले यमुनापार की आबादी आप जानते हैं 70 से 80 लाख है, किंतु फिर भी सरकार की ओर से अस्पताल की अनदेखी हो रही है जिसका खामियाजा मरीजों और उनके तिमारदारों को भुगतना पड़ता है। अध्यक्ष जी अपने पूर्व कार्यकाल में अस्पताल में मैंने ब्लड डोनेशन बस खरीदने के लिए 50 लाख रुपए अपने फंड से दिए थे किंतु आज तक पता नहीं यह फंड कहां लगाया गया, इसमें क्या किया गया इसकी कोई जानकारी मुझे नहीं दी गई। अतः अध्यक्ष जी मेरा आपके माध्यम से माननीय स्वास्थ्य मंत्री, दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री से अनुरोध है कि यमुनापार के इस अस्पताल को डॉक्टरों सहित पूरा स्टाफ व एमआरआई मशीन अविलंब उपलब्ध कराई जाए ताकि मरीजों का समय पर इलाज हो सके और लोगों की जान को बचाया जा सके। आपने बोलने का अवसर दिया इसके लिए आपका बहुत–बहुत धन्यवाद, जयहिंद।

माननीय अध्यक्षः अब माननीय सदस्यगण दिल्ली विधानसभा परिसर में 9 अगस्त,2022 को उद्घाटन किए गए फांसीघर की प्रमाणीकता के संबंध में नियम–271 के तहत 5 अगस्त, 2025 को शुरू की गई चर्चा जारी रहेगी। माननीय सदस्य श्री सूर्य प्रकाश जी चर्चा को शुरू करेंगे।

फांसीघर की प्रमाणिकता के संबंध में चर्चा (नियम–271)

श्री सूर्य प्रकाश खत्रीः अध्यक्ष जी जैसा कि इस सदन के अंदर एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात दिल्ली विधान सभा के सभी सदस्यों के ध्यान में अभय वर्मा जी के द्वारा लाया गया जिस पर हमारी बड़ी व्यापक चर्चा भी हुई। उसमें बताया गया कि दिल्ली की इस विधान सभा में जो विधान सभा 1912 में एक पार्लियामेंट के रूप में दिल्ली के अंदर स्थापित हुई थी उसके अंदर एक फांसी घर था और इसका उद्घाटन किया गया और काफी खर्चा करके ये बताया गया कि ब्रिटिश गवर्मेंट ने जिस जगह पर अध्यक्ष महोदय बैठे हैं उनके राइट साइड पर और लेफ्ट साइड पर एक कमरा था जिसमें कि फांसी दी जाती रही है। ऐसा उद्घाटन

कर कर मुझे ये तो पता था कि दिल्ली के अंदर एक ऐसी सरकार 11 साल में रही है जिन्होंने झूठ के ऊपर अपनी नींव रखी और दिल्ली के लोगों को ठगा लेकिन उसके बाद विधान सभा में आने के बाद इस तरह का षड़यंत्र करकर दिल्ली के लोगों को गुमराह करेंगे और एक हिस्ट्री बनायेंगे। मैं समझ रहा था कि उस दिन इतनी व्यापक चर्चा के बाद शायद हमारी विपक्ष की नेता आज आकर हमारे यहां के पूर्व मुख्यमंत्री जोकि आज कल गायब हैं दिल्ली से उनके बिहाफ पर इस सदन के अंदर खड़े होकर तमाम विपक्ष माफी मांगेगा कि हां हमसे ये गलती हुई। लेकिन मुझे लगता है कि इनकी खामोशी आज इस बात का प्रमाण है कि हम लोग झूठ भी बोलेंगे और राज भी करेंगे। मैं आज विपक्ष से पूछता हूँ कि अगर आपको दो दिन हो गए, तीन दिन हो गए अगर सत्यता का अगर आपके पास कोई प्रमाण है तो या तो आप दीजियेगा और या इस सदन में खड़े होकर आप सदन के सामने तमाम आप विपक्ष के लोग आज इस बात पर माफी मांगे और अगर ये सत्य है तो उसका प्रमाण दे और अगर ये सत्य नहीं है तो मुझे लगता है कि इसमें माफी मांगने में कोई दिक्कत नहीं है क्योंकि गलतियां सभी से होती हैं। कम से कम इतना माद्दा तो दिखाइयेगा आप कि अगर आप कह रहे हैं कि साहब यहां पर फांसी घर था तो फिर उन लोगों की लिस्ट भी दे दीजिएगा किन–किन को फांसी हुई थी। अगर आप ये कहते हैं कि यहां से एक सुरंग थी लाल किले तक तो मुझे उस सुरंग में लेकर चलिएगा। हम सब सत्तापक्ष के लोग आपके पीछे–पीछे चलने के लिए तैयार हैं। कम से कम दिखा तो दीजिएगा। हम लोग आपके पीछे चलेंगे और अगर ये सब असत्य है तो आज जिस तरीके से विपक्ष जब भी हम हाउस के अंदर कोई भी सत्य चीज लेकर आते हैं, कोई भी हम आपके काले कारनामों की जब हम लिस्ट खोलते हैं आपके काले कारनामों को बताते हैं तो आप सिर्फ सदन को डिस्टर्ब करने के अलावा या सदन को छोड़कर जाने के अलावा आपके पास कोई विकल्प नहीं रहता। मैं कहता हूँ कि सपोज मुझे आज एक भूल हो जाती है। मैं कहता हूँ मेरी विपक्ष की नेता यहां नहीं बैठी हुई। अचानक से लोग मुझसे कहते हैं कि बैठी हुई हैं तो मैं कहूंगा कि भई मेरे को भ्रम था मुझसे गलती हो गई मैं क्षमा मांगने के लिए तैयार हूँ। आप इतना बड़ा काला सत्य जिसको आप सफेद को काला करने पर लगे रहे। आपने यहां पर इतना बड़ा function किया। आपने दिल्ली को गुमराह किया। आपने एक झूठा यहां पर हिस्ट्री बनाने की कोशिश की या तो उस सत्यता का प्रमाण दीजिएगा और नहीं तो आपको बड़ा दिल दिखाना चाहिए।

आपको इस हाउस के अंदर माफी मांगनी चाहिए। इसमें आप कोई छोटे नहीं होगे। इससे आपका बड़प्पन भी पता लगेगा कि आपके नेता मैं तो आज याद कर रहा हूँ कि उस दिन लवली जी ने बहुत अच्छी बात कही थी कि जब नेता गुमराह करने लग जाए और नीचे के लोगों को समझ में आये कि हमारा नेता गुमराह कर रहा है तो उसका साथ छोड़ देना चाहिए और छोड़कर कुछ लोगों ने आज सत्यता का साथ दिया है। मैं इसलिए आपसे कहना चाहता हूँ विपक्ष की नेता जी को भी समक्ष विपक्ष को अगर आपके पास प्रमाण है तो आप दीजिएगा। अगर नहीं है तो आप इस सदन के खड़े होके माफी मागियेगा और ताकि हम जो किया हुआ आपका पुराना जो कार्य है उसको हम दुरूस्त कर सकें। अध्यक्ष जी आपने मौका दिया बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री गजेन्द्र यादव जी।

श्री गजेन्द्र सिंह यादवः आदरणीय अध्यक्ष जी 1912 में जो भवन बना 110 साल बाद 2022 में उस वक्त के मुख्यमंत्री श्री केजरीवाल जी ने यहां एक झूठा उद्घाटन करके इस भवन को कलंकित कर दिया। आदरणीय अध्यक्ष जी इतिहास को तोड़ना, मरोड़ना, झूठ बोलना, षड़यंत्र करना ये सब इनका स्वभाव है और लगातार ये काम करते रहे। आदरणीय अध्यक्ष जी ये जो इनकी मानसिकता है वो लूट में अंग्रेजों की मानसिकता, कांग्रेस की मानसिकता और इतिहास तोड़ने में मुगलों की मानसिकता को दिखाती है। इतिहास तोड़ने में जैसे औरंगजेब, बाबर, कुतुबुद्दीन **ऐबक** ने इतिहास को तोड़ मरोड़ के प्रस्तुत किया उसी में अगली कड़ी में केजरीवाल साहब का नाम भी दिल्ली की जनता याद रखेगी कि इन्होंने भी ऐसे एक बड़े भवन में फांसी घर दिखाकर इतिहास को तोड़ा मरोड़ा है तो औरंगजेब, बाबर, कुतुबुद्दीन ऐबक के बाद अरविन्द केजरीवाल का नाम भी इसमें शामिल हुआ है। कल हमारे मित्र जरनैल सिंह जी जीपीटी का हवाला दे रहे थे और फिर प्रवेश वर्मा जी ने भी इंटरनेट से कुछ जानकारियां निकालीं। मैंने भी केजरीवाल जी का नाम मैंने टाइप किया तो मुझे पता लगा कि खालिस्तानी खालिस्तानी आतंकी **पन्नू** के 134 करोड़ रूपया भी 2014 से लेके 22 तक जो उन्होंने लिया पन्नू से वो पैसा भी इन्होंने वापस करना है। आदरणीय अध्यक्ष जी।

....व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः एक मिनट अभी आपको मैं मौका दूंगा, आपको मैं मौका दूंगा बोलने का।

श्री गजेन्द्र सिंह यादवः आदरणीय अध्यक्ष जी मैं आपको इस सदन को अवगत कराना चाहता हूँ कि ये इनका एक बड़ा षड़यंत्र था। इनका एक बड़ा षड़यंत्र था। ये जो इनका शीशमहल है।

....व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः माननीय, बैठिए, बैठिए। माननीय गजेन्द्र जी मेरा कहना है कि ये बड़ा गंभीर मामला है और इस मामले पर विपक्ष ये कहीं ना कहीं बहाना ढूंढ रहा है तो इसलिए चूंकि ये फांसीघर का मामला इस पर मैं ये भी आपको बता दूं कि इन्होंने 1,04,49,279 रूपए इस पर खर्च किये थे। ये पहला बिल मेरे सामने आ गया है। आप कन्टीन्यू करिये। कन्टीन्यू करिये।

....व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः ये फांसीघर की चर्चा से भागने का एक तरीका है। पहले विरासत के साथ छेड़खानी करो। बैठिए आप आपको मौका दूंगा मैं। आपको मौका मिलेगा। आपको बोलने का मौका मिलेगा। चर्चा तो जारी रहेगी, चर्चा नहीं रूकेगी। करिये शुरू। आपको मैं मौका दूंगा जब आप बात करना। आपका नाम आ रहा है। इनके बाद आप बोलेंगे। इनके बाद आप बोलेंगे।

श्री गजेन्द्र सिंह यादवः अध्यक्ष जी मैं आपको बताना चाहता हूँ कि ये इनका।

....व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः अरे वो तथ्य पेश कर रहे हैं ना। तथ्य हैं उनके पास, आप बैठिए।

श्री गजेन्द्र सिंह यादवः आदरणीय अध्यक्ष जी मेरी बात पे ध्यान दीजिए। विपक्ष तो ऐसे ही चिल्लाता रहेगा। विपक्ष ऐसे ही चिल्लाता रहेगा। कोई भी सच बात, कोई भी सच बात।

माननीय अध्यक्षः आप बात पूरी करिये। बात पूरी करिये फटाफट।

श्री गजेन्द्र सिंह यादवः आदरणीय अध्यक्ष जी ये षड़यंत्र था कि जो शीशमहल सैकड़ों करोड़ रूपए से जो इन्होंने शीशमहल बनाया है ये इसी तरह से इंटरनेट पर गलत जानकारी

शीशमहल की भी दे देते कि शीशमहल भी बनाया नहीं गया था, शीशमहल भी आसमान से प्रकट हुआ था।

माननीय अध्यक्षः चलिए धन्यवाद।

श्री गजेन्द्र सिंह यादवः ऐसा घिनौना कृत्य ये दिल्ली के लोगों के सामने, दिल्ली के युवाओं के सामने, दिल्ली के विद्यार्थियों के सामने ये घिनौना कृत्य ये करना चाहते थे। जैसे फांसी घर का झूठ इन्होंने दिखाया ऐसे ही शीशमहल पर भी ये कोई गलत जानकारी इंटरनेट के माध्यम से डालते और उसको भविष्य में ये सच बताते कि शीशमहल भी बनाया नहीं था। शीशमहल केजरीवाल ने बनाया नहीं था, कोरोना के काल में बनाया नहीं वो भी प्रकट हुआ था। आदरणीय अध्यक्ष जी इनका कोई भी सच बात बोल दे इस पर इनको चीटियां काटनी शुरू हो जाती हैं। अरे सच सुनने की आप आदत डालिये। आपने झूठी सरकार 12 साल तक चलाई है। इस झूठी सरकार में दिल्ली के गरीब, पिछड़े, वंचित, एससी/एसटी समाज को आप कुछ दे नहीं पाये। आदरणीय अध्यक्ष जी ये लगातार झूठ बोलते रहे।

....व्यवधान....

श्री गजेन्द्र सिंह यादवः मैं तो मोहतरमा जी को कहना चाहता हूं, नेता, प्रतिपक्ष को कहना चाहता हूं अगर आप सच्ची हैं तो ये झूठी घटना पर माफी मांगिये और आदरणीय अध्यक्ष जी आपके पास विशेष अधिकार है मैं आपको निवेदन करता हूं कि ये झूठे केजरीवाल जो है उनको यहां पर बुलाया जाये और सदन के सामने माफी मंगवाई जाये। आदरणीय अध्यक्ष जी आप जिस प्रकार से सदन चला रहे हैं बहुत ही सराहनीय है आपने मुझे यहां पर बोलने का अवसर दिया है, बहुत–बहुत धन्यवाद। आदरणीय अध्यक्ष जी विपक्ष को माफी मांगनी चाहिये।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः अब मैं विरेन्द्र कादियान जी को मौका दे रहा हूं विरेन्द्र कादियान जी, विरेन्द्र कादियान जी का माइक खोला जाये।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः एक मिनट, एक मिनट आप बैठिये। विरेन्द्र कादियान जी आपने कल कहा था कि मैं बात करके आऊँगा और फांसी घर का सच मैं बताऊँगा, बताईये, बताईये, आप बताईये आप बात करके आये होंगे, विरेन्द्र कादियान, माननीय सदस्य विरेन्द्र कादियान जी का माइक खोला जाये।

....व्यवधान....

माननीय कानून एवं न्याय मंत्री (श्री कपिल मिश्रा): अध्यक्ष जी ये भ्रष्टाचारी के नारे लगाये जा रहे हैं इन्हें बाहर करिये सदन से।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य विरेन्द्र कादियान, विरेन्द्र कादियान जी का माइक खोला जाये।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः विरेन्द्र कादियान, विरेन्द्र कादियान उनका माइक खोलो।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः हां, बोलिये जी।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः माननीय अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः विरेन्द्र जी आपने कहा था फांसी घर का सच मैं पूछकर बताऊँगा, आपने ही राय दी थी हमने इसलिये आज पर पोस्टपोन्ड किया था, बताईये।

....व्यवधान....

श्री कुलदीप कुमारः अध्यक्ष जी तानाशाही नहीं चलेगी।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः संजीव जी, बताईये विरेन्द्र जी आपने बोला था।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः अध्यक्ष जी।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः करिये।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्षः करिये।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः कि जो चर्चा का विषय है उस चर्चा के विषय में जो पन्नू का नाम लिया।

माननीय अध्यक्षः आप फांसी घर पर बोलिये, फांसी घर जो बनाया है आपने यहां जो विरासत के साथ छेड़खानी की है, ये हैरिटेज़ बिल्डिंग के साथ आपने तोड़फोड़ करके और उसमें झूठ परोसा है उसके बारे में आपने कहा था मैं बात करके आऊँगा और बताऊँगा।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः मैं, जिस पर चर्चा हो रही है उस चर्चा पर आओ, ये चर्चा से भटककर पन्नू का नाम लेकर के तो.....।

माननीय अध्यक्षः ये आप पहले ये बताईये आप, आपने बोला था कि मैं कल आकर के बात करके स्थिति स्पष्ट करूंगा, आप बताईये अब।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः पहले सच का सामना करवाओ ना पहले।

माननीय अध्यक्षः आप पहले इसको स्पष्ट करिये।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः उससे सच निकलवा लो ना सर।

माननीय अध्यक्षः आप पहले इसको स्पष्ट करिये, आपको मौका मिल रहा है आपने कहा था।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः ये जो गलत कहा उसका सच निकलवाईये।

माननीय अध्यक्षः ये जिस तरह से इतिहास के साथ छेड़खानी हुई है ये विरासत जो हमारी है उस पर अब आप चर्चा से भाग रहे हैं। विरेन्द्र कादियान जी आप भाग रहे हैं आप कृपया अपनी बात कहिये, आप बात कहिये, बात कहिये।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः मैं यह कहना चाहूंगा अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः हां बताईये क्या करना है फांसी घर का क्या करना है बताईये।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः कल जिस विषय पर चर्चा थी और स्थगित की थी और आज के लिये रखा था तो मेरा कहना यह है अध्यक्ष महोदय कि ये एक गंभीर विषय है और बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। आपने मुझसे पूर्व सदस्य को जो कहने का अवसर दिया था वो बिल्कुल ही भटक के और...

माननीय अध्यक्षः आप सीधा असली बात करिये ना। देखिये, आप बताईये फांसीघर क्या कोई तथ्य है आपके पास।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः हम आपका सम्मान करते हैं।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः आप नहीं चलिये, बैठ जाईये।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः सम्मान के साथ हम...

माननीय अध्यक्षः मतलब अब आप भाग रहे हैं, चलिये, धन्यवाद।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः हमारे पास कहने को बहुत कुछ है।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, अब मैं माननीय सदस्य श्री गजेन्द्र दराल जी से अनुरोध करूंगा वो अपना विषय रखें।

....व्यवधान....

श्री अभय वर्मा (चीफ व्हीप): जो जो कॉस्ट आपने अभी बताये थे एक बार फिर से बता दीजिये शोरगुल में सुनाई नहीं दिया।

माननीय अध्यक्षः ये एक करोड़ चार लाख उन्नचास हजार दो सौ उन्नासी रूपये यहां पर खर्च किये गये हैं और विरासत के साथ छेड़खानी की गई है, जो ये हैरिटेज बिल्डिंग है उसके साथ जो छेड़खानी की गई है और जिस तरह से उसकी विरासत को बदला गया है और इतिहास के साथ जो छेड़खानी की गई है और इतिहास में लोगों को

गुमराह करने की, इतिहास को बदलने की कोशिश की गई है उस पर ये चर्चा है। इस पर इन्होंने कहा था मैं कल इस पर रिप्लाई करूंगा लेकिन बहुत दुःख की बात है कि ये अब इससे भाग रहे हैं। अब मैं गजेन्द्र दराल जी से अनुरोध करूंगा वो बात को आगे बढ़ायें।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः बैठिये, बैठिये, बैठिये, मुझे कार्रवाई करनी पड़ेगी मैं चेतावनी दे रहा हूं, मैं चेतावनी दे रहा हूं बैठ जाईये। अभी आप में से कई सदस्यों को बोलना है आपको अकेले नहीं बोलना है अभी एलओपी भी बोलेंगी, बैठ जाईये, चलिये शुरू करिये, गजेन्द्र दराल, माननीय सदस्य गजेन्द्र दराल, हो गया।

....व्यवधान....

श्री गजेन्द्र दरालः अध्यक्ष जी, मैं इस विधानसभा के परिसर में इस प्रांगण में जो।

माननीय अध्यक्षः बैठिये आप बैठिये।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः बैठिये–बैठिये, शुरू करिये।

श्री गजेन्द्र दरालः एक फांसी घर का उद्घाटन करके और इस परिसर के प्रागंण के साथ छेड़छाड़ की उसका मैं घोर विरोध करता हूं और मैं यहां पर जितने भी सरकारी अधिकारी हैं जिन्होंने इस ऐतिहासिकता को जानते हुये और इस...

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः नहीं बैठेंगे, चर्चा को नहीं होने देंगे आज ये।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः आप यहां पर ये झूठ की विरासत लिखकर इसको जारी रखना चाहते हैं।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः बैठिये–बैठिये–बैठिये आपको मौका मिलेगा अभी संजीव झा को भी मौका मिलेगा बैठिये आप, आप बैठिये–बैठिये, चलिये शुरू करिये।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य शुरू करिये।

श्री गजेन्द्र दरालः आदरणीय अध्यक्ष जी। आपने विषय रखा है कि हमारे इस परिसर के प्रांगण में जो एक फांसीघर का उद्‌घाटन पूर्व के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी ने किया। मैं कहूंगा कि अगर वो इस सरकारी विभाग के साथ मिलकर चलते और इस प्रांगण की ऐतिहासिकता को जानते तो शायद वो ऐसा कदम नहीं उठाते क्योंकि पिछली सरकारों ने अधिकारियों के साथ मिलकर काम करने की बजाय उन लोगों के साथ वो व्यवहार किया जो शायद इस इतिहास के बारे में बता ही नहीं पाये क्योंकि एक ऐसे प्रांगण के अंदर जहां पीढ़ियां लग जाती हैं और बड़ी मेहनत के बाद जनता के आशीर्वाद के बाद इस प्रांगण में बैठने का मौका मिलता है और ये हम सबका सौभाग्य है लेकिन उस प्रांगण के अंदर बगैर किसी तथ्य के और फांसी घर और उसका शिलान्यास कर देना ये एक पढ़े–लिखे की मूर्खता वाली बात है। मैं तो कहूंगा पता नहीं वो आईआरएस ऑफिसर भी कैसे बन गये उसका भी नहीं पता चलेगा और जनता ने दिखा दिया कि आप वहां पर भी फेलियर थे और दिल्ली के विकास में भी फेलियर थे इसलिये आज दिल्ली से बाहर पंजाब में अपनी जगह ढूंढ़ रहे हैं और पंजाब भी अब जागरूक हो चुका, पंजाब भी उनको वापसी कहीं ना कहीं भेजेगा।

....व्यवधान....

श्री गजेन्द्र दरालः आप, आप सत्यता को जानिये, आप सत्यता को जानिये। अध्यक्ष जी मैं सबसे पहले विधानसभा के सभी अधिकारीगणों का हृदय की गहराईयों से आभार करता हूं कि इन्होंने इस परिसर का ऐतिहासिक नक्शा निकालकर और वो तथ्य सबके सामने रखा क्योंकि मैं भी दस–पन्द्रह दिन पहले इस परिसर में आया था और मुझे बताया गया कि यहां से एक गुफा लाल किला जाती है क्योंकि इन्होंने कहीं ना कहीं उस चैट–जीपीटी पर डाल रखा था उसी चीज़ों को गुगल ने उठा रखा था ये

तो बहुत अच्छा हुआ हमें पता लग गया अब हम उस प्रमाणिकता को नहीं बतायेंगे लोगों को वरना हम भी राह में राह डाल देते। तो मैं आपका हृदय की गहराईयों से आभार व्यक्त करता हूं और साथ में सभी अधिकारियों का भी कि उन्होंने इस सत्यता को जाना और मेरे सामने बैठने वाले सभी के सभी विपक्षियों को इस पर माफी मांगनी चाहिये और मैं विधानसभा में ये रखता हूं कि उस पटल को वहां से हटाकर जो इन्होंने शिलान्यास का पत्थर लगाया है उसको वहां से हटाया जाये और फिर से इसकी प्राथमिकता को जानते हुये वो सारे काम करने चाहिये जिस प्रांगण में जिस मन्दिर में हम बैठे है आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री चंदन चौधरी जी।

श्री चंदन कुमार चौधरीः धन्यवाद अध्यक्ष जी, इन्होंने फांसी घर दिखाकर के सिर्फ अपने ऐतिहासिक धरोहर को ही नहीं छेड़छाड़ किया है एक इन्कम का सोर्स भी इन्होंने बनाया है। एक करोड़ समथिंग खर्च करके इन्होंने ये दिखाया कि कहां से पैसा आये और कहां से क्या किया जाये, चाहे वो स्कूल की बिल्डिंग हो, चाहे वो धरोहर हो या किसी भी क्षेत्र में हो।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः बोलिये, आप जारी रखिये, आप जारी रखिये।

श्री चंदन कुमार चौधरीः इन लोगों ने इतिहास की धरोहर को छेड़छाड़ करके एक संविधान से छेड़छाड़ किया है और इन्होंने आपके संज्ञान में ही है जो आपने फोटो उतरवाया, टीपू सुल्तान का भी फोटो लगाने का प्रयास किया। ये ऐतिहासिक धरोहर को छेड़छाड़ करके और यहां से लेकर सुरंग जो लाल किले तक जा रही है उसको दिखाकर के इन्होंने हमारी विरासत को और हमारी ऐतिहासिक धरोहर को जो छेड़छाड़ किया है इनको कड़ी से कड़ी सज़ा भी मिलनी चाहिये, जांच होनी चाहिये और इस पर एफआईआर दर्ज करके कोई भी व्यक्ति जो इसमें शामिल है उसमें दुस्साहस ना करे कि दौबारा कोई ऐतिहासिक धरोहर से छेड़छाड़ हो, यहां से लेकर के पंजाब तक इन्होंने जो अपने देश को बेचने का काम धरोहर को जो बेचने का काम किया है

इसके लिये आप एक कानून लायें और इनकी सज़ा अच्छी तरह से मुकर्रर की जाये बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री संजीव झा जी।

....व्यवधान....

श्री संजीव झाः अध्यक्ष महोदय बहुत–बहुत धन्यवाद कि आपने इस अवसर पर मुझे बोलने का मौका दिया। अध्यक्ष महोदय कल से मैं **हतप्रभ** हूं जिस तरह से इस सदन में चर्चा हो रही है। पता नहीं किसको बचाया जा रहा है और किसको कटघरे में खड़ा किया जा रहा है। आप यह कह रहे हैं कि इतिहास को छेड़छाड़ किया जा रहा है और इतिहास को बदलने की कोशिश करी। किसका इतिहास, फांसीघर किसने बनाया। ये अंग्रेज़ों के क्रूरता का इतिहास है।

माननीय अध्यक्षः आप प्रमाण दीजिए, आप प्रमाण देने के लिए खड़े हुए हैं।

श्री संजीव झाः अध्यक्ष महोदय, मुझे बोलने दीजिएगा। इतिहासकारों ने इस तरह के कई छुपे फांसी घरों की चर्चा की और इतिहासकारों ने कहा कि इस देश में ऐसे कई फांसी घर बने जिसका ना तो कोई रिकार्ड है, ना जो फांसी पड़ा उसका कोई रिकार्ड है। तो मैं यह मानता हूं कि आज जब चर्चा हो रही है कि यहां एक फांसी घर था। आपने कुछ हवाला दिया, आपने कहा कि 1912 का जो रिकार्ड है, जो नक्शा है, उस नक्शे में यह नहीं दर्शाता। मैं सहमत हूं कि उस नक्शे में नहीं दर्शाता वह। आपने दूसरी बात कहा कि हमने इतिहासकारों से बात करी। हम National archives में गये वहां हमें रिकार्ड नहीं मिला मैं सहमत हूं।

माननीय अध्यक्षः मिला है रिकार्ड तभी तो बता रहे हैं हम।

श्री संजीव झाः मिला है रिकार्ड तो दिखाइए।

माननीय अध्यक्षः टिफिन रूम है, टिफिन रूम है और लिफ्ट है।

....व्यवधान....

श्री संजीव झाः यह प्रस्ताव अभय वर्मा जी का है और आप मेरे अध्यक्ष हैं। मै। अभय वर्मा जी के प्रस्ताव पर बोल रहा हूं अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः एक मिनट, मैं माननीय सदस्यों को स्पष्ट कर दूं यह 271 में चर्चा हो रही है। 271 का अर्थ है कि अगर किसी सदस्य ने कोई बात ध्यान में डाली है तो अध्यक्ष स्वयं उस चर्चा को आगे बढ़ते हैं और आप 271 पढ़िए 271 में यह चर्चा को मैं आगे बढ़ा रहा हूं क्योंकि ये गंभीर मामला यहां पर आया है और उसकी तहकीकात की गई है। एक मिनट, मैं आपको तहकीकात की गई है, तथ्यों को जुटाया गया है और उसके आधार पर ये पाया गया है कि यहां फांसीघर नहीं टिफिन रूम है और एक नहीं ये दो हैं, ट्विंस हैं। मेरी चेयर के ....

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः एक मिनट बैठिये आप। मैं आपको पहले, एक मिनट बैठिये। माननीय सदस्यगण ये जो चेयर है अध्यक्ष की इसके राइट और लैफ्ट पर समान दूरी पर इंच टू इंच दो टिफिन रूम हैं। एक टिफिन रूम राइट पर है। जब आप एमएलए लॉज–2 से बाहर निकलते हैं, एमएलए लॉज–2 से बाहर निकलते हैं तो सामने है और इधर एमएलए लॉज–1 से निकलते हैं तो सामने हैं। ये National Archives के नक्शे में जो 1912 में नक्शा बनकर ये बिल्डिंग बनी है उसमें लिखा हुआ है और लिफ्ट लिखा हुआ है जिसको आपने फांसी का फंदा और फांसी का पूरा सैटअप बता दिया। तो अब आप आगे बढ़िए ये तथ्य है।

श्री संजीव झाः मेरा बस एक निवेदन है, मैं वो सारे साक्ष्य व प्रमाण की बात करूंगा। मुझे बोलने दिया जाए और मुझे बीच में न टोका जाए।

माननीय अध्यक्षः बिलकुल।

श्री संजीव झाः अध्यक्ष महोदय, आपने बिल्कुल ठीक कहा कि इतिहासकारों ने इस बात का उल्लेख नहीं किया है। अध्यक्ष महोदय, बहुत सारी ऐसी घटनाएं हैं जिस पर इतिहासकार एकमत नहीं है। ऐसी बहुत सारी घटनाएं हैं, जहां पर ना तो इतिहासकार की नज़र पड़ी।

.... व्यवधान ...

श्री संजीव झाः मैं आपको उदाहरण देता हूं। अध्यक्ष महोदय, ऐसे बहुत सारे प्रमाण हैं। आप सुन लीजिए पहली बार आए हैं बोलना भी सीखिये सुनना भी सीखिये। हम चौथी बार सदस्य हैं आप पहली बार हैं, सीखिये बोलना। तो मैं यह कहना चाह रहा हूं अध्यक्ष महोदय कि हम इसी सदन में कि शहीद ए आज़म भगत सिंह ने बम फेंका था इतिहासकार इस पर भी एकमत नहीं हैं। मैं इतिहासकार का नाम बता सकता हूं उन्होंने कहा कि सेंट्रल असेंबली जो अभी पुरानी पार्लियामेंट है उसमें बम फेंका। साक्ष्य बहुत सारे हैं।

माननीय अध्यक्षः हां तो सही है ये बात उसमें क्या है।

श्री संजीव झाः अच्छा आपने कहा न सही है।

माननीय अध्यक्षः हां, तथ्य है।

श्री संजीव झाः मैं खटकन कला गया जहां भगत सिंह जी का गांव है और वहां पर जिस परिसर में बम फेंका गया वो लिखा हुआ है अलीपुर रोड है बताईये अलीपुर रोड कहां है एक बात। दूसरी बात भगत सिंह जी ने बम फ़ेंकने से पहले यहीं दरियागंज में फोटो खिंचाया। कुदशिया घाट में दुर्गा भाभी से मिले और उसके बाद बम फ़ेंकने पर जो अरेस्ट हुए थे उन विश्वविद्यालय के जेल में भेजा था जहां पर अभी वीसी का आफिस है और इसके बाद एक गुप्त एलएनजेपी का आफिस था अंग्रेजों का वहां रखा गया फिर पार्लियामेंट हाउस जेल में भेजा गया था। तो अगर वह वहां फेंके होते तो फिर वहां से पार्लियामेंट गए तो वहां से यहां कैसे आते। तो मैं कहना यह चाहता हूं, मैं उदाहरण केवल इसलिए दिया की बहुत सारे ऐतिहासिक तथ्यों पर, मैं इतिहास का विद्यार्थी हूं। बहुत सारे ऐतिहासिक तथ्यों पर इतिहासकार एकमत नहीं है।

माननीय अध्यक्षः वही तथ्य तो हम कह रहे हैं, इतिहास के ही तथ्य ला दीजिए। इतिहासकारों के नाम बता दीजिए, इतिहासकारों का नाम बताइए जिसने यह कहा है कि यह फांसी घर था उन इतिहासकारों के नाम तो बताइए न।

श्री संजीव झाः मैं आ रहा हूं न।

माननीय अध्यक्षः हां आईये, बताइए, कुछ तो बताईये न।

श्री संजीव झाः अब आते हैं जिस आप 1912 के नक्शे की बात कर रहे थे। 1912 के नक्शे में यह असेंबली का एक ज़िक्र है। ये जो असेंबली है ये असेंबली का निर्माण ब्रिटिश स्थापत्य कला का एक उदाहरण है और इस असेंबली का कोई भी हॉल आप नहीं देखेंगे जहां दो मंजिली इमारत हो। आप फांसी घर जा करके देख लीजिए यह एक मात्र ऐसा स्पेस है जो तीन मंज़िली बनी हुई है। ना केवल तीन मंज़िली बना हुआ है इस फांसी घर को चारों तरफ से राजस्थानी शैली से ईंटों से घेरा गया ताकि उसके साउंड बाहर ना जाएं। तीसरी बात।

माननीय अध्यक्षः अरे इतिहासकारों के नाम बताइए ना प्रत्यक्ष कोई प्रमाण दीजिए, प्रमाण प्रमाण चाहिए।

श्री संजीव झाः मैं सारी बात करूंगा।

माननीय अध्यक्षः हां बताइए प्रमाण।

श्री संजीव झाः फिर जब फिर फिर जब 2022 में जिसका ज़िक्र आप बार बार कर रहे हैं कि यह तय हुआ कि जो आज भी आप भी जूझ रहे हैं उस समस्या से कि जितने भी अलग अलग कमेटी के चेयरमैन बने उसके लिए भवन नहीं थे कमरे नहीं थे तो उस कमरे को खुलवाया गया कि आखिर यहां क्या है। जब उस कमरे को खुलवाया गया तो कमरे से ऊपर गए, तीन रूम दिखा। उसके साथ एक खोखला स्थल दिखा। वह स्थल चारों तरफ से बंद था। उसकी एक ईंट हटाई गई। उस ईंट में दिखा कि यह एक खोखला भवन है। फिर वहां से नीचे जाया गया। नीचे जाने के बाद सतह था। जब सतह को तोड़ा गया उसके बाद नीचे एक सुरंग सा दिखा। वहां पर, वहां पर।

माननीय अध्यक्षः मतलब अफवाह फैला।

श्री संजीव झाः आप सुन लीजिए न अध्यक्ष जी मेरी बात।

माननीय अध्यक्षः मतलब आपका काम करने का तरीका यही है अफवाह फैलाना।

श्री संजीव झाः कल को सदन की चर्चा पर लोग न हंसें बस मैं उसके लिए आगाह कर रहा हूं आपको कि इस हाल पर चर्चा पर कोई जनता न हंसे।

माननीय अध्यक्षः आप काम ही ऐसा कर रहे हैं। आपका वक्तव्य यहां से, आपका वक्तव्य ही पूरा हंसी का पात्र हैं आप, आप हंसी के पात्र हैं इस समय।

श्री संजीव झाः आप कंकलूड कर लीजिएगा। हां मैं पात्र हूं आप कंकलूड कर लीजिएगा।

माननीय अध्यक्षः हां बिल्कुल आप हंसी के पात्र हैं।

श्री संजीव झाः इसी हॉल में उसी जगह पर कुछ जूते मिले, वहां रस्सियां मिली, वहां कंचा मिला। अब मैं यह कहना चाहता हूं कि उस वो जो दीवारें थी, वो जो कंचे थे अंग्रेज जब कभी भी, कंचा क्या कर रहा था वहां पर। मैं आपको साबित करता हूं।

.... व्यवधान ...

श्री संजीव झाः एक मिनट चुप कराईये इनको भई। सुन लो कुछ ज्ञान ही हो जाएगा भई। वो जो कंचे थे।

माननीय अध्यक्षः चलिए, हो गई बात आपकी।

श्री संजीव झाः वो जो कंचे थे शहीद ए आज़म भगत सिंह के एक किताब को भाई हरवंश सिंह ने लिखा है 'Shaheed –e- Bhagat Singh- a Biography' उसमें उन्होंने लिखा कि फांसी होने के बाद अंग्रेज़ उस कांच के गोले से अपने बंदूक से मार कर देखता था कि जिसकी फांसी हुई वास्तव में उसकी मृत्यु हुई है या नहीं हुई है ये हरवंश सिंह ने अपने किताब में लिखा है। तब मैं कह रहा हूं वो जो कांच के गोले वहां हैं यह प्रमाण है इसके कि वहां पर फांसी हुई और फांसी होकर फिर उसको चैक किया गया कि वास्तव में ऐसा नहीं है। मैं आपको आगाह करना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः बहुत ही, अब आप बैठ जाईये हो गया आपका ।

(समय की घंटी)

श्री संजीव झाः मैं बस आगाह करना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय कि अंग्रेजों का महिमामंडन इस सदन में हो रहा है और सारे कह रहे हैं कि अंग्रेज़ अच्छे थे, अंग्रेज़ की cruelty अच्छी थी। आप जाने–अनजाने में कोई भी ऐसी गलती ना कर ले जो कल कोई इतिहासकार साबित कर दे की ये अंग्रेज़ की क्रूरता का यह भवन था। आज हम कह दे अरविंद केजरीवाल से बदला लेते–लेते आप अंग्रेज़ की प्रशंसा करने लगें, ऐसा ना हो, तो आगाह करना चाह रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्यगण, हो गया, हो गया आपकी बात, आपकी बात हो गई पूरी।

श्री संजीव झाः नहीं–नहीं मैं आपको तथ्य दे रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः बोलिए और बोलिए।

श्री संजीव झाः देखिये अध्यक्ष महोदय, बाकी जो पॉलीटिकल लोग बात कर रहे हैं वो बिना सिर–पैर के बात कर रहे हैं। मैं इस सदन का मैं भी सदस्य हूं। 2022 में जब यह लगाया गया आप इसी सदन के सदस्य थे और ऐसा नहीं है कि आप बाकी आप बहुत पढ़–लिखे, सुलझे तथ्यों की गहराई में जाने वाले व्यक्ति हैं। आज जो बात कर रहे हैं, यह बात 2022 में हो सकती थी लेकिन 2022 में क्यों नहीं हुई। मैं आपकी विद्वता पर, आपके रिसर्च पर मैं कहीं डाउट नहीं कर रहा लेकिन मुझे यह लगता है कि आज इस भवन में, इस सदन में जो चर्चा हो रहा बहुत गंभीर चर्चा है। आपकी किसी भी बात से अगर अंग्रेज़ के तरफ खड़े दिखे आप तो समझिए कि आज के 10 साल बाद, 20 साल बाद, 25 साल बाद अगर ये साबित हो गया तो आप किस तरह कटघरे में खड़े होंगे यह आपको देखना पड़ेगा। मैं यह मानता हूं आपका जो इतिहास है, उस इतिहास में पहले भी अंग्रेज़ों के महिमा मंडन करते रहे हैं जिस ideology से आप लोग आते हैं। लेकिन यह हाउस उसका रिकार्ड न बने मैं यह आगाह करने आया हूं।

माननीय अध्यक्षः ठीक है चलिए हो गया। अब आप बैठ जाइए।

श्री संजीव झाः अध्यक्ष महोदय, 1927 के बाद यह सदन खाली हो गया। 1927 के बाद यह सदन खाली हुआ, 1929 के बाद। आप बताइए कि ये 20 साल तक।

.... व्यवधान ....

माननीय अध्यक्षः एक मिनट–एक मिनट। मैं इनको एक मिनट, एक मिनट। इनको, झूठ बोलने का पूरा मौका दे रहा हूं मैं, इनको झूठ बोलने दो जितना बोलना है आप बैठ जाइये, बैठ जाइए। आप बताइए।

श्री संजीव झाः अध्यक्ष महोदय, जिसको यह टिफिन घर बनाया जा रहा है,

.... व्यवधान ....

श्री संजीव झाः अरे आप निकाल देना आपके अध्यक्ष हैं। आप निकाल देना आपके अध्यक्ष हैं। 20 साल जब ये भवन खाली हुआ 1929 में उसके बाद यहां क्या–क्या हुआ।

इसी भवन में परिसर में डिस्ट्रिक्ट कोर्ट था, इसी परिसर में कमिश्नर कोर्ट था, इसी परिसर में चूंकि लाहौर में हमारा apex court हुआ करता था इसीलिए कई सारे डिसिजन इसी जगह पर हुआ। इतना ही नहीं WW-II, British India War Office का रिकार्ड ये कह रहा है कि कई सारे गुप्त मिटिंग जब ये सदन खाली कर दिए गए तो इसी जगह पर हुई। ये भी कहा जाता है कि आईएनए की मिटिंग भी इसी जगह पर हुई। आज़ाद हिंद फौज के आयोजकों के साथ मिटिंग अंग्रेज़ों ने इसी सदन में करी। तब मैं आपको कहना चाह रहा हूं कि बहुत सारी बातें जो इतिहास में दफन कर दी गई, इतिहासकार नहीं पहुंच पाया आप इसकी जांच कराइए। आप Archeological Survey of India (ASI) में भेजिये सारे रिकार्ड, जो रिकार्ड यहां पड़ा हुआ है। चप्पल यहां पड़े हुए हैं, रस्सी यहां पड़े हुए हैं, कंचे वहां पड़े हुए हैं। इस सारे तथ्यों को पहले जांच हो और अगर यह तथ्य गलत साबित हो गया मैं आपका सर सर माथे पर ले लूंगा। लेकिन अगर गलत साबित नहीं हुआ तो मैं आगाह कर रहा हूं फिर ये काला धब्बा होगा इस सदन का। एक बात। दूसरी बात ...

माननीय अध्यक्षः चलिए बस हो गई बात।

श्री संजीव झाः आप स्पीकर है। आपने कहा कि ये चीफ मिनिस्टर का फैसला था। क्या आप मानते हैं कि स्पीकर पर चीफ मिनिस्टर का कंट्रोल होता है। नहीं, आप हमारे guardian है, आप इस सदन के guardian हैं चीफ मिनिस्टर किसी चेयर को कन्ट्रोल नहीं कर सकता। सदन का जो भी निर्णय होता है, सदन का जो भी फ़ैसला होता है वो स्पीकर independent तरीके से लेता है। कल आपने ही कहा चेयर से कहा आपने कि ये मुख्यमंत्री का आदेश था। क्या आप मुख्यमंत्री का आदेश यहां मानते हैं और अगर मानते हैं तो हम अपने आप को captured महसूस कर रहे हैं और अगर आप नहीं मानते हैं तो इस हाउस की स्वायत्तता भी आज भी है ये स्वायत्तता पहले भी थी। तो इस तरह का कोई correlation ना किया जाए कि किसी चीफ मिनिस्टर का फ़ैसला या चीफ मिनिस्टर का कंट्रोल किसी सदन पर है। अगर सदन पर कन्ट्रोल है तो मैं यह मानता हूं कि फिर हम सब की स्वायत्तता कहीं ना कहीं से कंट्रोल किया जा रहा है executive के ज़रिए। मैं कतई नहीं चाहूंगा। यह वह जगह है जहां से सरकार हमसे पैसा लेती है executive बाकी काम करने के लिए। हम इनसे कन्ट्रोल नहीं हो सकते और आप हमारे guardian है। तो इसलिए अध्यक्ष महोदय मैं आगाह करना चाह रहा हूं और बार बार कहना चाह रहा हूं कि कोई भी निर्णय अफरातफरी में ना लिया जाए। कोई भी निर्णय instant ना लिया जाए। अगर यह instant निर्णय लिया तो इसके दूरगामी प्रभाव होंगे। ना केवल दूरगामी प्रभाव होंगे, यह सदन अंग्रेज़ के क्रूरता के साथ खड़ा दिखेगा जो मैं कतई नहीं चाहूंगा। इसीलिए कल जब से ये चर्चा हुई है मैं आहत हूं। आप अलग बात कर लेते। सदन का इतना इंपोर्टेंट विषय है। झुग्गियां टूटी पडी है।

माननीय सभापतिः अब आप अपनी बात को समाप्त करेंगे।

श्री संजीव झा : सारे विषयों को दरकिनार करके।

माननीय सभापतिः आप को मैंने चौदह मिनट दिये हैं।

श्री संजीव झाः एक ऐसा इतिहास जो कि अंग्रेजों का काला चरित्र बताता है उस पर चर्चा करो।

माननीय अध्यक्षः 14 minutes जबकि तीन मिनट बोले हैं बाकी सदस्य। चलिए।

श्री संजीव झाः अध्यक्ष जी कह रहे है कि अरविंद केजरीवाल ने छेड़छाड़ कर लिया इतिहास से। अग्रेंजों को क्रूर कैसे कह दिया। ये अग्रेंजों का फांसी घर कैसे हो गया। मैं असहमत हूं अध्यक्ष महोदय। मैं चिंतित हूं अध्यक्ष महोदय। मुझे पीड़ा है अध्यक्ष महोदय कि इस विषय पर चर्चा करके और वो भी तब जब British Parliament के सदस्य यहां पर मौजूद थे और आपने ये रिकार्ड British Parliament से मांगा है। एक क्रूर आदमी अपना ये सर्टिफिकेट देगा कि हॉ मैंने cruelty की थी। हमने फांसी घर बनाया था। अध्यक्ष महोदय ये यहां से ये आदेश .....

माननीय अध्यक्षः चलिए। अब आप बैठिये, अब आप बैठिये। अब आप बैठिये । मैने आपको पूरा समय दिया है। अब आप बैठिये। अब आप बैठिये। बैठिये, बैठ जाईये। धन्यवाद। बहुत बहुत धन्यवाद। बहुत बहुत धन्यवाद। एक मिनट सब लोग बैठ जाइए। मैं कुछ तथ्य आपके सामने पेश कर रहा हूं। आपके सामने, बैठिये। कुलवंत राणा जी बैठिये। ये..

.... व्यवधान ....

माननीय अध्यक्षः बैठिए बैठिए। माननीय सदस्यगण अब मैं आपके सामने कुछ तथ्य पेश कर रहा हूं। पहला विषय तो यह है इस पूरी चर्चा का कि यह जो प्रतिबिंब यहां है, यह वास्तविकता में आम आदमी पार्टी किस तरह देश में अफवाह फैलाकर देश में दंगे और देश के इतिहास को बदलना चाहती है ये इसका प्रत्यक्ष प्रमाण ये सामने दिखाई दे रहा है। दूसरा मैंने उनको 15 मिनट का समय दिया, उन्होंने एक भी तथ्य इस पक्ष में नहीं रखा। इन्होंने इतिहासकारों की बात की। एक इतिहासकार का नाम नहीं बताया। मैं अब जो इन्होंने अपनी बात में कहा है मैं आपके सामने रखता हूं फिर उसके बाद चर्चा को आगे बढ़ाएंगे। इन्होंने कहा और आज समाचार पत्रों में पूर्व स्पीकर श्री रामनिवास गोयल जी का स्टेटमेंट भी छपा हुआ है। उसमें उन्होंने कहा कि 1912 में तो यह टिफिन रूम ही था नक्शे में है मैं उसको इनकार नहीं करता। उन्होंने यह भी कहा लिफ्ट है यह भी मैं इनकार नहीं करता। यानि कि उस समय 1912 में जब बिल्डिंग का नक्शा बना तो इसी परपज से बना था। लेकिन 1926 में यानि कि अठारह जनवरी 1927 को जब नई पार्लियामेंट बन गई तो यह देश की पहली संसद जो है यह वहां शिफ्ट हो गई और उसके बाद उन्होंने कहा कि उसके

बाद यहां पर ये भी उन्होंने कहा है साथ में कि यह बिल्डिंग से अलग हैं। यह बिल्डिंग की सिमेट्री में नहीं आता है। अपनी उसमें स्टेटमेंट में उन्होंने कहा है कि उसमें नहीं आता है। उसके बाद यहां पर ये फांसी घर 1927 के बाद बना है। अब मैं आपके सामने एक दस्तावेज़ जो मैंने जुटाया है गांधी स्मृति से 07 अप्रैल 1931 इन्होंने कहा कि सत्ताईस... उन्नीस सौ छब्बीस के बाद यानी अठारह जनवरी उन्नीस सौ सत्ताईस के बाद यहां पर फांसी घर बनाया गया। 07 अप्रैल 1931 को इसी सदन में राष्ट्रपिता श्री महात्मा गांधी जी आए थे। गांधी जी तीसरी और अंतिम बार तीन बार इस सदन में आए गांधी जी। मैं चाहूंगा हमारे इस सदन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तीन बार विराजे और एक बार तो सदन की कार्यवाही में visitor's gallery में बैठ करके उन्होंने चार घंटे कार्यवाही देखी और वो तारीख हैं 05 मार्च 1919 । ये सदन जिसकी ये बात कर रहे हैं, युद्ध सम्मेलन की इन्होंने जो बात की उसका तथ्य भी मेरे सामने है। वो युद्ध सम्मेलन इस सदन में हुआ, 28 अप्रैल 1918 को गांधी जी स्वयं लिखते हैं। पहली बार महात्मा गांधी दिल्ली विधानसभा भवन में वायसराय द्वारा प्रथम विश्व युद्ध में भारतीयों की हिस्सेदारी हेतु आयोजित युद्ध सम्मेलन की बैठक में भाग लेने 28 अप्रैल 1918 को पधारे। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों की भर्ती हेतु समर्थन हासिल करना था। भारत का जो गौरवशाली इतिहास है, अगर उसके साथ कोई छेड़खानी करता है। ''शहीदों की चिताओं पर लगेंगे, हर बरस मेले वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशान होगा।'' लेकिन जो लोग फर्जीवाड़ा करेंगे, लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ करेंगे, उनका हश्र दिल्ली की जनता ने जो किया है उससे भी ज़्यादा बुरा करेगी। मैं आगे इतिहास पढ़ता हूं। इस बैठक का उल्लेख अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग में' करते हुए महात्मा गांधी जी लिखते हैं, तो मैं सम्मेलन में शामिल हुआ। प्रथम विश्व युद्ध का जो युद्ध सम्मेलन बुलाया गया, सुनिए आप, आपने एक भी तथ्य पेश नहीं किया, मैं दर्जनों तथ्य पेश कर रहा हूं। बैठिए आप और अभी नक्शा भी दिखाऊंगा आपको। अभी स्क्रीन पर नक्शा भी दिखाऊंगा। ठीक है। अब आप आइए आगे तो मैं सम्मेलन में शामिल हुआ वायसराय भर्ती से संबंधित प्रस्ताव पर मेरा समर्थन प्राप्त करने के लिए अत्यंत उत्सुक थे। मैंने हिंदी हिंदुस्तानी में बोलने की अनुमति मांगी वायसराय ने मेरी

प्रार्थना स्वीकार कर ली है। ये इसी सदन में हो रहा है। किंतु सलाह दी कि मैं अंग्रेज़ी में भी बोलूं। मुझे कोई भाषण नहीं देना था। मैंने इस आशय का केवल एक वाक्य बोला अपने उत्तरदायित्व को पूरी तरह समझते हुए मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। यह घटना है 28 अप्रैल 1918 की जिसका इन्होंने ज़िक्र किया युद्ध सम्मेलन की। दूसरी घटना– गांधी जी यहां दूसरी बार 05 मार्च 1919 को आए। महात्मा गांधी जी दूसरी बार दिल्ली विधानसभा भवन में पांच मार्च 1919 को पधारे। दरअसल 24 फरवरी 1919 को गांधी जी ने वायसराय को एक तार भेजा था जिसमें उन्होंने रोलेट बिल की केंद्रीय विधायिका में पास करवाने की सरकार के निर्णय पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया था। माननीय सदस्यगण यह जो सदन है यह इतिहास का वो पन्ना है, जिसने आजादी की जंग का ऐलान–ए–जंग किया था और वो था रोलेट एक्ट का विरोध। मैं उसके संदर्भ में आपके सामने कुछ तथ्य रखना चाहता हूं क्योंकि इन्होंने जिस तरह इतिहास का मजाक बनाया है और जिस तरह यह पवित्र सदन देश में आज़ादी की जंग का ऐलान करने वाला पहला स्थान था जहां पर पंडित मदन मोहन मालवीय मेरी कुर्सी के पीछे लगी है तस्वीर। विट्ठल भाई पटेल, लाला लाजपत राय, गोपाल कृष्ण गोखले, विपिन चंद्र पाल सब हमारी जगह इसी तरह इन बैचों पर ऐसे दर्जनों देशभक्त और freedom fighters जहां बैठ करके अंग्रेज़ों की नीतियों का विरोध करते थे। तो मैं आगे पढ़ता हूं। 24 फरवरी, 1919 को गांधी जी ने वायसराय को एक तार भेजा था जिसमें उन्होंने रोलेट बिल को केंद्रीय विधायिका में पास करने की सरकार के निर्णय पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया था। तार अनुत्तरित रहने पर गांधी जी स्वयं वायसराय से मिलने 4 मार्च को दिल्ली पहुंचे। पांच मार्च को वह वायसराय से मिले कहां मिले जहां हमारे डिप्टी स्पीकर साहब मोहन सिंह बिष्ट जी का कमरा है यह वायसराय का कमरा होता था और उस समय Imperial Legislative Council थी। यह चेयर पर वायसराय बैठते थे यानि कि उस समय के राष्ट्रपति चेयर करते थे इसको, उस कमरे में गांधी जी आए और उन्होंने वायसराय जी को 5 मार्च को पहले वायसराय से मिले लेकिन उन्हें समझाने में असफल रहे। यानी वायसराय नहीं माने रोलेट एक्ट को रोकने के लिए इसके बाद उसी रोज़ वे दिल्ली विधानसभा स्थित शाही विधायिका Imperial Legislative Council जहां

रोलेट बिल को पास करने की कार्यवाही होनी थी उसे देखने और सम्मिलित पक्षों का तर्क सुनने दर्शक दीर्घा में पहुंचे। अंततः विधायिका ने रोलेट बिल को पास कर दिया जिसे देखकर गांधी जी काफी दुखी हुए और इस काले कानून के खिलाफ सत्याग्रह करने का मन बना लिया और नॉन कोऑपरेशन मूवमेंट जिसको कहा जाता है, कि सरकार को सहयोग ना करना असहयोग आंदोलन, लेकिन वो जो पहला आंदोलन था उसका नाम असहयोग नहीं था वो disobedience आंदोलन था। उसके बाद आंदोलन होता है दिल्ली की सड़कों में 30 मार्च, 18 मार्च को रॉलेट एक्ट जहां पास होता है, 30 मार्च को दिल्ली की सड़कों पर गोलियां चलती है, हज़ारों लाखों लोग सड़कों पर उतर जाते हैं और एक दर्जन से ज़्यादा लोगों की गोलियों से हत्या हो जाती है और 13 अप्रैल मात्र रोलेट एक्ट यहां पास होने के 20 दिन के अंदर अंदर जलियांवाला बाग में निहत्थे मासूम लोगों की अंग्रेज डायर ने गोलियां चलाकर हत्या ...., यानी कि हमारा ये पवित्र सदन जलियांवाला बाग की घटना से भी सीधा जुड़ा हुआ है। अब जो इन्होंने कहा कि 1927 के बाद गांधी जी आए 7 अप्रैल, 1931 को। गांधी जी तीसरी बार अंतिम बार दिल्ली विधानसभा भवन में 7 अप्रैल, 1931 को पहुंचे, जब इन्होंने इस भवन में स्थित काउंसिल हॉल में इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के चौथे वार्षिक सत्र को संबोधित किया, इस दौरान उन्होंने हिंदुस्तानी में अपना अध्यक्षीय भाषण भी दिया, जो संलग्न है। मेरे पास वो भाषण भी है जो गांधी जी ने इसी सदन में ये, ये पूरा भाषण है मैं आप सबको भी दूंगा इस भाषण को और उसके बाद मेरे पास ये 8 अप्रैल, 1931 की ये हिंदुस्तान टाइम्स की कटिंग भी है जिसमें गांधी जी ने हमारे इस काउंसिल चैंबर उस समय इसको कहा जाता था, काउंसिल चैंबर में फिक्की के जो वो था सम्मेलन उसका उद्घाटन किया था। यह पूरी खबर है इस पर। सवाल यह है कि इतने सारे तथ्य हैं जो उस सच से जुड़े हुए हैं। इसी लेजिसलेटिव असेम्बली में इस चेयर पर विट्ठल भाई पटेल जी पहले इंडियन इलैक्टेड स्पीकर थे जो चुने गए, और जो पहली ऐसी सीट थी जो भारतीय को मिली और जिससे पूरे हिंदुस्तान में खुशी मनाई गई। उस पर इन्होंने कभी कोई बात नहीं की। 10 साल यह सत्ता में रहे इन्होंने कभी उस पर विचार नहीं किया। गांधी जी तीन बार यहां आए इसके बारे में कभी विचार नहीं

किया। रोलेट एक्ट जैसा बड़ा आंदोलन देश का यहां से हुआ इस पर विचार नहीं किया। इसी सेंट्रल लेजिसलेटिव असेम्बली में साइमन कमीशन का विरोध हुआ और लाल लाजपत राय शहीद हो गये, वही लाल लाजपत राय रेजोल्यूशन लेकर आए, इसी सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली में शहीद ए आज़म भगत सिंह ने बम और वो बम हार्मलैस था, किसी को नुकसान नहीं पहुंचाने के लिए था, लेकिन लोगों को जगाने के लिए था। उस पर कभी बात नहीं करेंगे। झूठ परोसकर यहां पर और उस पर फिर चोरी और सीना जोरी, देखिए आप काम करने का तरीका देखिए। अरे आप माफी मांगिये समझ में आती है। आप झूठ को सच बताने की कोशिश कर रहे हैं? कितनी बुरी बात है। अब मैं इस पर चाहूंगा कपिल मिश्रा जी अपनी बात शुरू करें। बैठिए आप। इस समय आपको पूरा देश देख रहा है । आप झूठ की दुकान चला रहे हैं, आप झूठ की दुकान चला रहे हैं ना, मैं इस सदन में आपको झूठ की दुकान नहीं चलाने दूंगा। बोलिए आप। करिये।

श्री कपिल मिश्रा (माननीय मंत्री): आदरणीय अध्यक्ष महोदय बहुत बहुत आभार आपने इस महत्वपूर्ण चर्चा में मुझे बोलने का अवसर दिया। मैं अपनी बात शुरू करने से पहले केवल इतना कहना चाहता हूं कि:

"वो हंस के झूल गए थे फांसी पे,

वो हंस के झूल गए थे फांसी पे,

उनका मजाक उड़ाया गया,

नकली रस्सी, नकली फंदा, नकली मंच

और दर्द का नाटक रचाया गया।"

इससे बड़ा कोई पाप नहीं हो सकता जो इस सदन में पिछली सरकार के द्वारा किया गया और मैं ऑन रिकार्ड यह कहना चाहता हूं बहुत बड़ी बड़ी बातें बोली जा रही थी, मैं यह कहना चाहता हूं, आप कह रहे हैं कि अध्यक्ष स्वतंत्र होता है अभी विपक्षी ने बोला। होता है काग़ज़ पर, तुमने गुलाम बना के रखा था। आन रिकार्ड मैं इस सदन में कहना चाहता हूं। ये सदन की गरिमा को पुनरस्थापित करने का काम आपके द्वारा

किया जा रहा है अध्यक्ष महोदय। अध्यक्ष महोदय आपके द्वारा इस सदन की गरिमा को पुनरस्थापित करने का काम किया जा रहा है।

....व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः बैठिए बोलने दीजिए। अभी मिलेगा मैडम को मौका अभी एलओपी मैडम को मिलेगा मौका, वो बोलेंगी, आप बैठिए। बिलकुल लेकिन झूठ नहीं परोसने देंगे आपको, आप बोलिए। आपका काम करने का तरीका देश देख रहा है और ये एक ऐसा उदाहरण बनेगा जो पूरे देश को पता लगेगा कि किस तरह आप लोग कम करते हैं। चलिए।

श्री कपिल मिश्रा (माननीय मंत्री): इस सदन में लोकतांत्रिक मर्यादाओं की धज्जियां पिछली सरकार के कार्यकाल में इसी सदन में उड़ाई गई हैं। इसी सदन का एक छोटा सा उदाहरण ये सामने, सामने जो पत्रकार दीर्घा है और दर्शक दीर्घा है ना इसको शीशों से बंद कर दिया गया था जो आपके द्वारा खोला गया अध्यक्ष महोदय। ये लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाई गई थी यहां पर। बेशर्मी का, मर्यादाओं का, मर्यादाओं को तोड़ने का ऐसा कोई कार्य बचा नहीं था इस सदन में, इसी सदन के अंदर महिलाओं की पिटाई से लेकर ना जाने कितने कार्य किए गए और मीडिया को यहां से भगाने का पाप किया गया था पिछली सरकार के कार्यकाल में। अध्यक्ष महोदय, ऐतिहासिक तथ्यों पर मतभेद हो सकता है।

....व्यवधान...

श्री कपिल मिश्रा (माननीय मंत्री): भाई सुनने की क्षमता रख लो। अभी, अभी तो शुरू ही नहीं हुई बात अभी से क्यों उछल रहे हो, अभी तो शुरू ही नहीं हुआ तुम अभी से उछलने लगे, अभी सुनो, अभी तो कहानी शुरू ही नहीं हुई मेरे भाई अभी से क्यों डर रहा है। अध्यक्ष महोदय उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक तथ्यों पर मतभेद होते हैं, इतिहासकारों में मतभेद होते हैं, होते हैं मतभेद इतिहास में, इतिहासकारों में, पर एक बात में कोई मतभेद नहीं है कि पिछली सरकार भ्रष्टाचारी थी और झूठ पर टिकी हुई थी। फ़र्जी सीएम था, फ़र्जी सीएम, फ़र्जी सरकार, फ़र्जी काम, फ़र्जी वादे और फ़र्जी फांसी घर।

फ़र्जी फांसी घर और उसके बाद अपने पाप को, अपने भ्रष्टाचार को, अपनी चोरी को, अपने झूठ को, अपनी लूट को छुपाने के लिए, आज तुम शहीदों के बारे में झूठ फैलाना चाहते हो सदन के अंदर बैठकर, तथ्यों के ऊपर झूठ और कह रहे हो अगर सच बोलोगे तो अंग्रेज़ों के साथ खड़े हो जाओगे। तुमने भगत सिंह के, उधम सिंह जी के, राजगुरु जी के, सुखदेव जी जैसे ऐसे शहीदों का अपमान करने का पाप किया है यह नकली जूते वहां पर रखकर, नकली कपड़े वहां पर रखकर, पाप किया है आपने, पाप किया है आपने। इससे बड़ा कोई पाप नहीं हो सकता, इससे बड़ा कोई झूठ नहीं हो सकता, शहीदों को श्रद्धांजलि देने की बात अलग होती है, शहीदों के नाम पर नकली फांसी घर और उसमें करोड़ों रुपए फूंकने का पाप किया गया है यहां पर और आज कहते हो जो इस सच को सामने लाएगा वो अंग्रेज़ों के साथ खड़ा हो जाएगा, जो सच बोलेगा वह अंग्रेज़ों के साथ खड़ा हो जाएगा, क्योंकि तुमने झूठ बोला, तुमने पाप किया, तुमने चोरी की और तुमने इस ऐतिहासिक इमारत के साथ छेड़छाड़ करी, खाली चंद पैसों के लालच में, इसके अलावा कोई लालच नहीं था, चंद पैसों के लालच में, चंद पैसों के लालच में इन्होंने दिल्ली को बर्बाद किया, चंद पैसों के लालच में इन्होंने इतिहास से छेड़छाड़ करने का पाप किया। बात केवल फर्जीवाड़े तक सीमित नहीं है, केवल फर्जीवाड़े तक सीमित नहीं है बात फर्जीवाड़ा तो इनकी पूरी सरकार का मॉडल ही था। इसके अलावा इन्होंने कुछ किया ही नहीं। अस्पताल के नाम पर फर्जीवाड़ा, मोहल्ला क्लिनिक के नाम पर टीन के डब्बे रख दिए गए थे, स्कूलों के नाम पे नकली–नकली पतली–पतली पट्टियां बैठा के स्कूल बना दिए गए थे। फर्जीवाड़ा तो तुम्हारे माथे पर लिखा हुआ है। लेकिन बात केवल फर्जीवाड़े की होती तो सदन में इतना समय चर्चा नहीं होती। चर्चा इसलिए हो रही है, क्योंकि शहीदों का अपमान करने का पाप पिछली सरकार ने इस सदन में करने की कोशिश की है। शहीदों की आत्मा रोती होगी, रोती होगी शहीद ए आज़म भगत सिंह की आत्मा, राजगुरु जी की आत्मा, सुखदेव जी की आत्मा, उधम सिंह जी की आत्मा रोती होगी कि उनकी शहादत को भ्रष्ट केजरीवाल जैसे लोगों ने अपनी राजनैतिक दुकानदारी, नौटंकी बनाने के लिए इस्तेमाल करने का पाप किया है। शहीदों की आत्मा रोती होगी। पूछते होंगे कि ऐसा दिन आ गया क्या आज़ाद भारत में कि एक भ्रष्टाचारी, शराब माफिया का दलाल, भ्रष्टाचार के आरोप में जेल गया हुआ, आज भी दोबारा जेल जाने की तैयारी में जो भ्रष्टाचारी बैठा है। वो भ्रष्टाचारी।

......व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः बैठिए, बैठिए, बैठिए अरे आप भी बैठिए, बोलिए चलिए।

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः बैठिए, बैठिए, बैठिए।

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः मार्शल्स, मार्शल्स, इनको बाहर ले जाइये, इनको बाहर ले जाइये। आतिशी जी को बाहर निकालिए। आतिशी को निकालिए बाहर । चलिए।

(माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार मार्शल्स द्वारा माननीय नेता, प्रतिपक्ष श्रीमती आतिशी को सदन से बाहर किया गया।)

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः चलिए शुरु करिये।

......व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः बैठिए, बैठिए।

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः मैं जरा एक मिनट, एक मिनट। खाली उनको, किसी को नहीं।

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः चलिए शुरु करिये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः चलिए शुरु करिये।

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा बैठ जाईये। आप जारी रखिये, आप जारी रखिये। मार्शल्स प्रेम चौहान जी को बाहर ले जाईये। मार्शल्स जरनैल सिंह जी को बाहर ले जाईये। जरनैल सिंह और प्रेम चौहान को और कुलदीप कुमार को बाहर लेकर जाईये, तीनों को। तीनों को बाहर ले जाईये। चलो ले जाओ।

....व्यवधान...

(माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार मार्शल्स द्वारा माननीय सदस्यों श्री प्रेम चौहान, श्री जरनैल सिंह तथा श्री कुलदीप कुमार को सदन से बाहर किया गया)

(प्रतिपक्ष के अन्य उपस्थित सदस्यों द्वारा विरोध स्वरूप सदन से वाक आउट किया गया।)

माननीय अध्यक्षः चलिये जारी करिये। शुरू करिये। शुरू करिये।

श्री कपिल मिश्रा (माननीय मंत्री): आदरणीय अध्यक्ष महोदय। सत्य और तथ्य की दो लाइन चोरों को भगाने के लिए काफी होती है सदन में दोबारा साबित हो गया। केवल दो ही अभी तो तथ्य रखे ही गए थे और इनकी मजबूरी है कि ये चिल्लाएंगे क्योंकि इनके आका जो यहां से भागकर पंजाब में बैठे हैं, उनकी यहां चोरी की, लूट की, इतिहास से छेड़छाड़ की और शहीदों से अपमान करने के उनके पापों की पोल आपके माध्यम से इस सदन में उसका सत्य सामने आया, इनकी मजबूरी है। अगर यह यहां पर चिल्लाएंगे नहीं तो इनके आका इनको डांटेंगे, इनकी क्लास लगाएंगे। मैं आपको बधाई देना चाहता हूं और उस पूरी टीम को जो यह सच सामने लेकर आई है। इस दिल्ली ने केवल स्क्रिप्ट, डिजाइन, सैट, ड्रामा केवल यही राजनीति दस साल में देखी। सैट डिजाइन करो स्क्रिप्ट लिखो और ड्रामा रचो, वही इस विधानसभा के परिसर में करने का पाप किया गया था। आपने रखा तथ्य बिल्डिंग में दोनों तरफ सेम डिजाइन है टिफिन रूम की। एक को आपने मान लिया टिफिन रूम है दूसरे को आपने फांसी घर बोल दिया, एक के ऊपर आज भी वहां पर जाकर मैं कल देख कर आया हूं अध्यक्ष महोदय जी ने बताया और बहुत सारे विधायक साथी देख कर आए हैं उस दूसरे साइड की लिफ्ट को रूम को, दोनों तरफ सेम है और जब बोला भी तो कोई तथ्य नहीं था इनके पास कहने के लिए। स्पष्ट है कि यहां पर शहीदों का अपमान किया गया, इतिहास से छेड़छाड़ की गई, हेरिटेज से छेड़छाड़ की गई, केवल चंद पैसों के लालच में और जब

आज आपके माध्यम से यह सच सामने आया है तो यह चिल्ला रहे हैं और भाग रहे हैं। मैं पुनः आपको बधाई देता हूं, इस सदन को बधाई देता हूं सत्य सामने आया और इस सदन के इतिहास की, इसकी विरासत की इतनी गहराई है, इतना कुछ है बताने के लिए, मुझे नहीं लगता नीयत साफ होती तो इसमें कोई झूठ जोड़ने की ज़रूरत थी, सत्य ही इतना विशाल है इस सदन के परंपरा का इतिहास का कि इसको किसी झूठ की आवश्यकता नहीं थी, झूठ की आवश्यकता पड़ी क्योंकि झूठ की आड़ में लूट का एक खेल खेलना था, पुनः आपको बधाई और इस प्रस्ताव को सदन में लाने के लिए और सत्य को सामने लाने के लिए भी पुनः–पुनः अभिनंदन, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय मंत्री श्री एमएस सिरसा जी।

श्री मनजिन्दर सिंह सिरसा (माननीय मंत्री): बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी। एक ऐसा पाप जो दिल्ली में इन बेईमानों ने किया उसका पर्दाफाश करने का आपने काम किया और उन महान शहीदों के प्रति जिस तरीके यह फ्रॉड लोग जिनकी सारी दुकान ही नौटंकी और फ्रॉड पर टिकी है, इन्होंने देश और दिल्ली का कोई ऐसा इंसान नहीं जिसको नहीं ठगा, कोई ऐसा बचा नहीं जिसको उन्होंने ठगा नहीं, ऐसा इंसान जिसके रग–रग में ठगी घुसी हुई है, जिसके रग–रग में बेईमानी है, जो हर वक्त ढूंढता है कैसे मैं दूसरे का अभी सब कुछ चुरा लूं। इसका क्रेडिट भी छीन लूं, इसका भी चुरा लूं, इसका भी छीन लूं। अब देखिए जिसको फांसी घर कहा जा रहा है, मैं भी अध्यक्ष जी के साथ देखने गया, मैं आपको उसके कुछ तथ्य बताना चाहता हूं। मैं मानता हूं कि आज यह जो विधान सभा है, यह देश की अकेली ऐसी विधान सभा है जो सर्टिफिकेट दे सकती है कि दिल्ली में एक मूर्ख मुख्यमंत्री रहा था उसका सर्टिफिकेट इशु करने की आज हमारे पास स्थिति है। तथ्यों के साथ हम सर्टिफिकेट इशु कर सकते हैं यह स्थिति केवल देश की इस विधानसभा को मिलेगी। अब देखिए उस जगह को जिसको यह बताया जा रहा है यहां पर फांसी दी जाती थी। मैं जाकर देखने गया अध्यक्ष जी के साथ। वहां पर एक टिफिन रूम के लिए ऊपर लिफ्ट लगी है यह खाना ले जाने की लिफ्ट है। जो खाना ले जाने की लिफ्ट है उसके अंदर सारे की सारी चीज़ें हैं जो as it is intact लगी हैं। क्या? उसकी शाफ्ट इंटैक्ट है आज तक। वह **शाफ्ट** लगी हुई है लिफ्ट की। वह टोकरी जिसमें खाना जाता था वह इंटैक्ट है वो लगी हुई है टोकरी।

वह टोकरी लगी हुई है और शाफ्ट का साइज सुनकर आप हैरान होंगे ढाई फुट बाई तीन फुट है शाफ्ट का साइज। ढाई फुट बाई तीन फुट शाफ्ट का साइज है। अध्यक्ष जी पहले आदमी को छीलते होंगे ये तो? मतलब यह मैं हैरान हूं इस आदमी की सोच के ऊपर यह कैसा नालायक आदमी है, क्या ऐसी नालायकी को इससे पहले कभी आपने इतिहास में कुछ सुना है? अभी तो मैं देख कर हैरान हुआ कि ये बेईमान लोग किस तरह से हमारे महान शहीदों के इतिहास को ख़राब करने पर लगे हैं। अभी एक इनका बेईमान एमएलए यहां पर बोल गया। आप लोगों ने कपिल जी ने भी नोटिस किया और मैं कहना चाहता हूं आप रिकार्ड में से इसको देखिएगा और उसका सवाल उठाना चाहिए। क्या बोल गया यहां पर, बोलता है कि जो शहीद भगत सिंह जी ने बम फेंका था इस पार्लियामेंट में फेंका था? आप इतने इस कदर, इस कदर अपने झूठे बेईमान नेता को सच साबित करने के लिए जो 1929 के अंदर बम फेंका गया 1927 के अंदर यहां पर पार्लियामेंट नहीं थी। तो क्या इनका यह कहना है कि शहीद भगत सिंह इस खाली जगह पर आकर बम फेंक कर गया? यह यह इतने नकली लोग हैं, यह इतने बेईमान लोग हैं और इनकी बेईमानी की कोई सीमा ही नहीं बचती। अब देखिए, अब देखिए 1927 में यहां से पार्लियामेंट बदल गया। इस पार्लियामेंट के अंदर इस हाउस में विट्ठल भाई पटेल जी भी रहे स्पीकर। अब इन नालायकों का ये मानना है कि जो 75 साल तक कोई ना बोला अरविंद केजरीवाल को सोए को याद आ गया। ना विट्ठल भाई पटेल बोले कि भाई आप हमारी पार्लियामेंट में फांसी किसी को कैसे दे सकते हैं। ना इससे पहले बाबा साहब अंबेडकर बोले कि आप पार्लियामेंट के अंदर फांसी किसी को कैसे दे सकते हैं? कोई ना बोला, कौन बोला, जो देश का सबसे बड़ा ठग है, शराब घोटाले का जेल गया हुआ, किताब घोटाले में जेल गया हुआ, बिजली घोटाले में जेल गया हुआ, जेल का फ्रॉड आदमी वह आकर याद करा रहा है बताइए इतिहास। और सबसे बड़ी बात देश के अंदर हमारे जितने भी शहीद हुए उन सब का रिकार्डिड हिस्ट्री है, आर्काइव्स के अंदर उस वक्त के रोजनामचे छपते थे। मैं दिल्ली आर्काइव्स में जाकर इसको देख के आया कोई चार–छह महीने पहले। एक एक रिकार्ड उन महान शहीदों का किस तारीख को किस जेल में लाया गया, पहले किस हवालात में लाया गया, किसने केस चलाया, कौन उसका इंवेस्टिगेशन आफिसर था, किस जज ने फांसी का आदेश सुनाया, यह सारे का सारा इतिहास रिकार्डिड इतिहास है दिल्ली आर्काइव्स के

अंदर। पर इस नालायक को पढ़ने का कहां टाइम था, इसके पास तो लूटने का समय था। अब आप देखिए खुद जेल मंत्री है। मैं आपको बताना चाहता हूं जेल मैनुअल। जेल मैनुअल किसी भी फांसी देने वाले का समय तक रिकार्ड करता है। समय रिकार्ड होता है इतने बजकर इतने मिनट पर फांसी दी गई। यह भी रिकार्ड होता है किसकी उपस्थिति में दी गई और यह भी रिकार्ड होता है कि फलां डाक्टर ने इसको वेरिफाई किया कि यह मृत घोषित किया। अब यह पागल उठ पड़े। कहीं सवेरे–सवेरे उठे होंगे उधर ईडी, सीबीआई वाले ढूंढ रहे होंगे। इन्होंने सोचा होगा कि यार इस बहाने से शहीदों की तरफ ध्यान दे देंगे, अखबारों में यह खबर छप जाए हमारी शराब की खबर रुक जाएगी। इस आदमी को एक ही काम आता था भई मेरे को अपनी खबर कैसे रोकनी है। तो खबर रोकने के लिए इसने सोचा होगा कि भई एक काम करता हूं यह नया काम निकाल देता हूं। अब आप देखिए इस आदमी की नालायकी की इन्तेहां देखिए यहां रुका नहीं है यह। इसकी इन्तेहां देखिए। क्या कहता है दोनों तरफ सेम लिफ्ट रूम बने हैं। दोनों तरफ एक ही तरह के लिफ्ट रूम हैं। कह रहे हैं इधर शहीदों को शहीद करते थे, इधर फांसी देते थे, उधर कह रहा उधर तो खाना ही लाते थे। बताइए, भाई एक अगर दो सिमिलर ब्रांच बनी है अब कह रहे हो तीन मंज़िल है। अभी नालायकों को बताए कि लिफ्ट का मशीन रूम ऊपर ही होता है। आप चलिए आप अपने साथ पत्रकारों को लेकर जाइए। दिखाइए कि इसमें फांसी चलाने वाले को कहां से घुसाते थे। कौन सा ऐसा आदमी था जिसको ढाई फुट और तीन फुट के उस लिफ्ट के अंदर फांसी दी जा सकती थी, और मकसद क्या है? और आज भी मैं आपको अध्यक्ष जी एक बात कहना चाहता हूं आपने सारे अच्छे काम किए लेकिन एक काम अभी तक भी आपने ठीक नहीं किया, वह क्या है? आप सवा करोड़ बता रहे हैं मेरे को बताइए सवा करोड़ कहां लग गया वहां पर, यह वह सवा करोड़ है जो आठ सौ रुपए फुट के कमरे को आठ हज़ार बना देते हैं। यह दस लाख रुपए बिछाए इन्होंने शहीदों के नाम पर पैसे खाने का रास्ता ढूंढा है। इनको पता है कि अगर शहीदों के नाम पर पैसा खाएंगे बोल तो कोई पाएगा ही नहीं और बोलने का तो जैसे कपिल जी ने कहा कह देंगे कि आप अंग्रेज़ों के साथ, आप अंग्रेजों के साथ हो, आप अंग्रेजों के साथ हो। यही करके तो उन्होंने दस साल राज किया है। एक करोड़ रुपया जाकर देखिए। आप सब लोग जाइए मैं अध्यक्ष जी

आपसे आग्रह करता हूं आप इसकी थर्ड पार्टी जो 5 स्टार होटल का काम करते हैं उस लेवल के आर्किटेक्ट को लेकर इसकी मपाई करा लीजिए तब भी बीस लाख रुपए का काम नहीं है। एक करोड़ रूपया खाने के लिए इन्होंने यह रास्ता निकाला। मैं ऊपर गया मैं आपको तीन चार चीज़ें बताना चाहता हूं। वहां मैंने रस्सा देखा। वह रस्सा वह है जो मशीन टूल का है, जो मशीन के वक्त में बना हुआ रस्सा है, जो मशीनों से बनता था और रस्सा इतना मोटा है जो जहाज़ को खींचने के लिए है, समुद्री जहाजों वाला। वह किसी शहीद के गले में रस्सा डाला नहीं जा सकता। इन नालायकों ने शहीदों का इस कदर अपमान किया है। वहां फ्लीट बूट उठा के जो फ्लीट बूट होते थे, उस ज़माने में वो बूट नहीं थे। कहां से उठाकर फ्लीट बूट अपने तसमे वाले लाके वहां रख दिये और अब कहते हैं कंचे रख दिए कंचे। अब एक नालायक और बोल रहा था। बोला यहीं बैठा था 81 नंबर पर यहां इधर ही कहीं। बोला वो जो कंचे होते थे ना, वह बंदूक होती थी बंदूक। वह जब नहीं मरता था ना, फिर उसको बंदूक से मारते। बता यार, मतलब क्या कोई कोई है यार इनमें कोई इंसानियत वाली बात। ये शहीदों के प्रति आप बात कर रहे हो, कोई मुर्गियों की बातें हो रही हैं, कोई मुर्गों की बातें हो रही हैं। आप महान देश के शहीदों के बारे में बोल रहे हो कंचों से गोलियां बनाते थे, गोलियों से मारते थे। यह सारी की सारी मानसिकता जो इस इंसान के अंदर भरी हुई है कूट कूट कर बेईमानी भरी हुई है। और मैं आज कहना चाहता हूं जो शहीद भगत सिंह के प्रति इन्होंने आकर यह नया एक ढोंग रच कर एक नया इतिहास पेश करने की कोशिश की है इसके पीछे कोई ज़रूर साज़िश है। यह स्वभाविक रूप से निकली बात नहीं है। यह कह देना कि इस, इस विधान सभा के अंदर बम फेंका गया था, शहीद भगत सिंह की, राजगुरु, ऐसे महान शहीदों के प्रति नए narrative सृज देने में यह स्पष्ट लगता है, जैसे टीपू सुल्तान का नाम ये यहां पर लेकर आए थे उसके पीछे एक मकसद था। टीपू सुल्तान की फोटो जब लेकर आए थे उसके पीछे इनका एक मकसद था राजनीतिक। मैं मानता हूँ कि आज जो उन्होंने एक नया वृतांत यहां पर रचा है और ये कहा है कि भगत सिंह ने इस पार्लियामेंट में बम गिराया था इसके पीछे भी, ये भगत सिंह जी का सुनहरी इतिहास को बदलना चाहते हैं। **खटकर कलां** गांव का नाम बोलना नहीं आता, बात इतिहास की करते हैं, बात शहीदों की करते हैं। अध्यक्ष जी, मैं आपका धन्यवाद

करता हूं, आपने टीपू सुल्तान के वंशजों को जो हमारे देश के महान शहीदों का इतिहास बदलना चाहते थे। टिफिन रूम को फांसी का फंदा चूमने वाले जो लोग हमारे महान शहीद जो हंसते–हंसते फांसी का फंदा चूमते थे उनको ढाई फुट के कमरे में कैसे डाला जाता होगा, ऐसे नालायकों को आपने एक्सपोज करने का काम किया है, मैं आपका धन्यवाद करता हूं और मैं आपको इस बात की भी बधाई देता हूं, जैसे मैंने पहले कहा था, दिल्ली का मुख्यमंत्री रहा वो दस साल, अब आप दिल्ली के लोग समझ लें, दिल्ली के लोग समझ लें, दस साल तक कितने मूर्ख आदमी को आपने दिल्ली का मुख्यमंत्री बना के रखा, किस निहायत मूर्ख आदमी को। अगर शर्त लगा के भी, कोई पचास लाख करोड़ रुपए की शर्त लगा लेना कि इससे बड़ा मूर्ख एक ढूंढ के दो, तो कोई बड़ी बात नहीं है केजरीवाल खुद ही हाथ खड़ा कर दे कि नहीं भैया मेरे से ऊपर कोई नहीं है। जो आदमी लिफ्ट को फांसी रूम बता सकता है, जो आदमी ढाई फुट और तीन फुट के चौड़े लिफ्ट की शाफ्ट को फांसी का फंदा लगाने वाला बता सकता है, ऐसे मूर्ख आदमी दिल्ली की सत्ता पर दस साल तक का काबिज रहें, यही कारण है कि दिल्ली आज यहां तक पहुंची है। मैं धन्यवाद करता हूं आपने मुझे बोलने का मौका भी दिया और इस बेईमान आदमी को एक्सपोज भी किया। और मैं चाहूंगा अध्यक्ष जी एक बार सारे मीडिया के लोगों को, वहां के, इनके लोगों को बुलाइए और दिखाइए मपाई और अच्छा तो होगा कि इनमें से एक आधे को कहिए एक बार जरा बीच में लटक के दिखा, लटक सकते हो ढाई बाई तीन के कमरे में। आपका धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः बहुत बहुत धन्यवाद माननीय मंत्री जी और यह बात तो सही है कि एक तरफ टिफिन रूम और एक तरफ फांसीघर, सीमिलर चीज की, ऐसा कैसे हो सकता है। अब मैं माननीय मुख्यमंत्री–श्रीमती रेखा गुप्ता जी से अनुरोध करूंगा।

श्रीमती रेखा गुप्ता (माननीया मुख्यमंत्री): माननीय अध्यक्ष जी, अभी हमारे आदरणीय मंत्री सिरसा जी ने कहा कि केजरीवाल बेवकूफ आदमी था, मैं इनसे बिल्कुल सहमत नहीं हूं, कतई सहमत नहीं हुई, बहुत गलत बात कही इन्होंने, केजरीवाल को बेवकूफ कह दिया, बिल्कुल बेवकूफ नहीं थे वो, इतने समझदार थे, इतने समझदार थे उस व्यक्ति को ये पता था कि लोगों की भावनाओं के साथ कैसे खेला जाता है। एक डिग्री नहीं थी उनके पास, कई डिग्रियां थी, फाइनेंस की डिग्री थी जिससे वो आईआरएस बने,

उनके पास साइकोलॉजी की डिग्री थी जिससे उन्होंने लोगों की भावनाओं को कैसे कब्जा किया जाता है, उनके साथ कैसे खेला जाता है, जनता को कैसे धोखा दिया जा सकता है और पहले दिन से उनकी क्रिया कर्मों में वह दिखाई देता था।.... एक्टिंग की भी डिग्री थी येस, ये सही कहा है इन्होंने, प्रवेश जी ने, एग्री, ड्रामा कंपनी की भी डिग्री थी, झूठ बोलने का भी कोई सर्टिफिकेशन कोर्स होगा वो भी था। इतना पढ़े लिखे समझदार व्यक्ति थे वो कि उनका एक–एक किया हुआ कृत्य किसी ना किसी कारण के कारण होता था, वो मफ्लर भी पहने थे तो कारण था। वो दो नंबर फ़ालतू की शर्ट भी पहनते थे तो कारण था। वो दो रुपए का पैन जेब में रखते थे कारण था। छोटी सी कार रखते थे कारण था। गंदी टूटी चप्पल पहनते तो कारण था। हर चीज़ का कारण था, भूखे रहते थे तो कारण था, खाते थे तो कारण था, गाते थे तो कारण था.. और खांसते थे तो कारण था, खांसते थे तो कारण था। हर चीज़ के पीछे वो व्यक्ति इतना कैलकुलेटिव था कि क्या करने से क्या होने वाला है वो देख लेता था, वो समझ लेता था, समझ लेता था वो। और तिरंगे की छांव में जिस तरीके से उन्होंने स्क्रिप्ट लिख–लिख करके देश की जनता को बेवकूफ बनाया। रामलीला मैदान से जो कहानी शुरू करी उसको हम सबने देखा, कैसे ईमानदारी की, देशभक्ति की, त्याग की, तपस्या की, सेवा की बातें कर करके पूरे देश को उसने बेवकूफ बनाया। लोगों को लगा अरे ये तो देवता आदमी है, कहां धरती पर पैदा हो गया, इसको तो तुरंत यहां से सीधा विधान सभा पहुंचाए। वो आदमी भी बेचारा जनता को दिखाते हुए कि नहीं मैं चाहता नहीं हूं परंतु मुझे तो चुनाव लड़ना पड़ेगा। मैं बनना नहीं चाहता मुख्यमंत्री, मुझे बनना पड़ेगा। बड़े बंगले में मेरा दिल नहीं है रहने का, मुझे रहना पड़ेगा। शीश महल बनवाना पड़ेगा। कोई आइटम अगर नहीं भी लिखी हुई उसको लेना पड़ेगा। पत्थर तो, महान आत्मा है वाइट संगमरमर के बिना कैसे चलेगा और वो व्यक्ति जो रामलीला मैदान में वो फर्श पर लेट–लेट करके जिसने अपना चेहरा बनाया दिल्ली के आगे, अपने शीश महल में मसाज सेंटर बनवाया उसने, उस व्यक्ति की लिखी हुई स्क्रिप्ट थी कि दिल्ली विधान सभा में फांसीघर। एक बात से सहमत हूं, जरूर रात को उसको सपना जरूर आया होगा क्योंकि आइडिया जनरेशन का एक टाइम होता है, तो वो आइडिया जनरेट हुआ कि अरे ऐसा कर सकते हैं, जैसे ही उसने देखा कि भई ये दो पिलर हैं, ये लिफ्ट है, ऐसे ही इमजिनेशन

कई बार बादलों में होती है, कई बार पहाड़ों में होती है, ऐसा लगता है कुछ फीगर बन रही है, ऐसी फीगर उसके दिमाग में बनी, तुरंत उसने तय कर लिया कि ये तो फांसीघर है, ये फांसीघर है तो फांसी किसकी लगी, ये उसने सोचा भई शहीदों की लग सकती है क्योंकि उसके, वो तो ये सोचते थे कि मैं भगत सिंह के विचारों का वारिस हूं और भगत सिंह की फोटो पीछे लगाकर, उन्होंने लगाई तो लगाई बाद में उनकी बीवी ने भगत सिंह की और उनकी, दोनों की फोटो लगा दी कि ये दो हैं देश के लाल, भगत सिंह को तो दुनिया ने माना पर उन्होंने अपने आप को मनवाने के लिए पूरा ज़ोर लगा दिया। तो वो जो लिफ्ट वाला पोर्शन है मतलब दो दीवारें ढाई फुट की, मैंने भी उसको देखा, मैंने कहा देखकर तो आऊं, पता नहीं, कुछ बोलने से पहले यहां पर तथ्य जांच लूं। बिल्कुल सही बात है। यानी किसी आदमी को पकड़कर भी लटका दे तो वो पिलर पकड़कर खड़ा हो सकता है, मैं तो नहीं फांसी लूंगा जी, ऐसी, इतनी जगह है वो कि वो नीचे धक्का देने से भी ना जाए। कोई, उसमें वो कौन सी मशीन होती है हमारी, सुपरसकर, सुपरसकर भी अगर....

....व्यवधान....

श्री अनिल झाः .....शहीदों का ये अपमान हो रहा है..

....व्यवधान....

माननीया माननीय मुख्यमंत्रीः अरे शहीद, वो शहीद जो केजरीवाल के सपनों मे थे वो शहीद। अनिल झा जी, वो शहीद जो केजरीवाल के सपनों में थे,

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः आप बैठिए, बैठिए। बैठिए अब। साइलेंट रहिए। साइलेंट रहिए।

.....व्यवधान.....

माननीया माननीय मुख्यमंत्रीः वो शहीद, वो फांसीघर जो केजरीवाल के सपने में आया। एक मिनट के लिए बोलोगे नहीं मेरी बात के बीच में, बता रही हूं मैं।

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः साइलेंट रहिए आप। साइलेंट रहिए। मुख्यमंत्री जी को बोलने दीजिए।

.....व्यवधान.....

माननीया माननीय मुख्यमंत्रीः वो शहीद जो मनगढंत थे, वो शहीद, वो फांसीघर वो जो उसके सपनों में आया, अगर एक दस्तावेज था तो ये लोग दिखा सकते थे, एक कागज था, एक दस्तावेज था तो दिखाते, इनमें हिम्मत होती, तो ला के यहां विधान सभा के पटल पर पेश करते, हिम्मत नहीं थी, उठ के भाग गए। उन्हें पता था कि क्या जवाब दें। मैं सिलसिलेवार तरीके से अध्यक्ष जी बताना चाहती हूं। 1911 में ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की कि भारत की राजधानी अब कलकत्ता नहीं दिल्ली होगी, नया सचिवालय बनाने की बात हुई..

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः बैठिए। बैठिए।

.....व्यवधान.....

माननीया माननीय मुख्यमंत्रीः 1912 में ये भवन.....

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः बैठिए, बैठिए।

.....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः नहीं—नहीं, एक मिनट,

....व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः बैठिए। बैठिए।

.....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः आप बैठिए, बैठिए, बैठिए। जिन लोगों को नेम किया है हमने उनकी एक सूची बनाकर बाहर मार्शल्स को दे दी जाए, कोई कंफ्यूजन ना रहे, जिनको नेम किया है हमने, मार्शलआउट किया है उनकी सूची बनाकर...

....व्यवधान....

माननीय अध्यक्षः चलिए। हां जी, हां जी। शुरू करिए।

माननीया माननीय मुख्यमंत्रीः 1911 में ब्रिटिश सरकार ने घोषणा कि की भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली बनाई जाएगी और दिल्ली के लिए एक नया सचिवालय बने उसकी तैयारी कर दी। 1912 में ये भवन बनकर तैयार हुआ। 1913 से 1926 तक यहां पर सभी विधायी गतिविधियां हुई और इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल यहां से शुरू हुई जो ब्रिटिश सरकार की केंद्रीय विधायी समिति थी। इस भवन में जैसा आपने भी बताया गवर्नर जनरल, ब्रिटिश सचिव, चुने हुए भारतीय विधायी सदस्य, सब प्रस्तावों पर चर्चा करते थे। एक ऐतिहासिक भवन जहां कानून बनाए जाते थे, एक ऐतिहासिक भवन जो इतिहास के पन्नों में दर्ज है, जिसका डिजाइन जो है ब्रिटिश सरकार की उनके डिजाइनिंग के हिसाब से बनाया गया। जिस फांसीघर की ये बात कर रहे हैं उसके साइड में छोटी–छोटी सीढ़ियां हैं, क्योंकि अंग्रेज़ों की आदत थी अपने लिए तो कार्पेटिड बड़ी सीढ़ियां, बड़ा चेम्बर, बड़ा भवन बनाते थे पर भारतीय जो उनकी निगाह में उनके गुलाम थे, उनके छोटे अफसर थे, उनके लिए छोटी सीढ़ियों से जाना होता था, उनको यह भी इजाज़त नहीं थी कि आप वायसराय के कमरे के सामने से भी गुजर जाओ। वो सीढ़ियां उन भारतीय अफसरों के लिए थी, उन भारतीय कर्मचारियों के लिए थी, जो उन सीढ़ियों में से जाकर ऊपर बैठकर खाना खाते थे और वो टिफिन सर्विस वहीं से वो टिफिन जाता था और ऊपर जाता था, सेम एक जैसे दोनों जगह बने है और ऐसा बाकी सरकारी बिल्डिगों में भी बना है, यदि आप इसकी इंक्वायरी बिठाएंगे तो उसमें आपको पता चलेगा।

और जेल की बात जो हम कर रहे हैं। यदि दिल्ली में कोई पुरानी जेल थी तो वो मौलाना आज़ाद प्रेमिसेस जो आज मौलाना आज़ाद कॉलेज है वहां होती थी और वहीं पर ही रखा जाता था कैदियों को और वहीं पर ही फांसी होती थी, वहां पर एक फांसी गेट भी है जिसके बारे में सब जानते हैं। और ये केजरीवाल जी की और आम आदमी पार्टी की आदत थी कि भावनात्मक रूप से लोगों को भटकाया जाए, सहानुभूति बटोरी जाए। ना कोई दस्तावेज़, ना कोई नक्शा, ना कोई प्रमाण, परंतु बिना कुछ, क्योंकि डिक्टेटरशिप उनके अंदर थी, उन्होंने इसे फांसी घर डिक्लेयर कर दिया। इतिहास को तोड़ना–मरोड़ना अध्यक्ष जी एक बात है परंतु ये पूरी तरीके

से जनता के साथ धोखा और शहीदों का अपमान है। जिस इमारत में कानून बने उसी के बारे में झूठ इससे बड़ा कुछ हो नहीं सकता। संविधान की गरिमा जहां से बनती है, जिस सदन में बैठ के हम संविधान की गरिमा की बातें करते हैं उसी दरो–दीवार पर उन्होंने झूठ लिख दिया और पूरा ना केवल शहीदों को शर्मिंदा किया, उनकी कुर्बानी को शर्मिंदा किया, आज हम सबको उस बात पर शर्म आ रही है। झूठ बोलने की बीमारी, झूठ बोलने की बीमारी उस व्यक्ति में शुरू से थी और भावनाओं को टूल के रूप में वो इस्तेमाल करता था, टूल के रूप में। इमोशनल ड्रामा, इमोशनल ब्लैकमेल और इतना कहकर के मैं जो एक करोड़ रुपए उन्होंने खर्च किए इसके कार्यक्रम पर, विज्ञापनों पर वो वसूलें जाने चाहिए इस आदमी के साथ में। इंक्वायरी होनी चाहिए और साथ में ये भवन क्योंकि आने वाले समय में 24, 25 सितम्बर को दिल्ली में।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः चलिए एक मिनट। साइलेंट, साइलेंट जी।

माननीय मुख्यमंत्रीः 24, 25 सितम्बर को दिल्ली में।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आप देखिये मैं चेतावनी दे रहा हूं मुख्यमंत्री बोल रही हैं आप बैठ जाइये। उनको अपनी बात करने दीजिए। बैठ जाइये, बैठ जाइये। मुख्यमंत्री जी आप अपनी बात जारी रखिये।

माननीय मुख्यमंत्रीः 24, 25 सितम्बर को ....

...व्यवधान ...

माननीय अध्यक्षः बैठिए, बैठिए।

माननीय मुख्यमंत्रीः 24, 25 सितम्बर को दिल्ली में ऑल इंडिया स्पीकर मीट होने वाली है, ऑल इंडिया स्पीकर कॉफ्रेंस होने वाली है। मैं ये चाहती हूं कि ऑल इंडिया स्पीकर मीट, ऑल इंडिया स्पीकर मीट होने से पहले इस मिथ्या, इस झूठ, झूठ की बिल्डिंग को हटाना होगा।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः देखिए आप मुख्यमंत्री जी को बोलने दीजिए मैं कार्रवाई करूंगा। मुख्यमंत्री जी को अपना वक्तव्य देने दीजिए। शांति रखिये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः मैं खड़े होकर आपको चेतावनी दे रहा हूं, मैं कार्रवाई करूंगा। आप भी बैठिए, आप भी बैठिए। मुख्यमंत्री जी बोल रही है कोई नहीं बोलेगा बीच में उनको अपनी बात पूरी करने दो।

माननीय मुख्यमंत्रीः अध्यक्ष जी मैं ये चाहती हूं कि 24, 25 अगस्त को जो ऑल इंडिया स्पीकर कॉफ्रेंस दिल्ली में होने वाली है, देशभर के स्पीकर दिल्ली में आएंगे, इस बिल्डिंग को देखेंगे तो ये झूठ का पुलिंदा, जो झूठ की पोटली यहां पर रखी हुई है, इसको उससे पहले हटा देना चाहिए। ये यहां नहीं होना चाहिए। क्योंकि हम क्या दिखाएंगे, क्या दिखाएंगे उनको, क्या दिखाएंगे उनको, क्या दिखाएंगे उनको? बिल्कुल, क्या बोलेंगे उनको। बिल्कुल हटा देना चाहिए और बिल्कुल हटा देना चाहिए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः चलिए, चलिए।

माननीय मुख्यमंत्रीः जनता का पैसा 1 करोड़ रुपए जो इन्होंने खर्च किया इसके ऊपर वो वसूलना चाहिए, एफआईआर होनी चाहिए, इंक्वायरी बैठाई जानी चाहिए और एक–एक रुपया जनता का वसूल होना चाहिए। मेरी आपसे इल्तिजा है, बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्यगण मैं अब अंत में आप सबको बताना चाहता हूं कि यहां पर हिस्टोरियंश भी विजिटर्स गैलरी में बैठे हुए हैं। मैं चुनौती देता हूं आम आदमी पार्टी के सभी सदस्यों को पूरी उनकी पार्टी को, वो एक हिस्टोरियन, एक हिस्टोरियन पूरे देश में, दुनिया में ऐसा लाकर के बता दें जो कहे ये फांसीघर था।

दूसरा मैं आपको नक्शा दिखा रहा हूं जो इंडिया, जो नैशनल आर्काइव से दिल्ली असेंबली को प्राप्त हुआ है। फारमल और ऑफिशियल वे में। यहां का भवन का 1912 का नक्शा दिखाया जाए (स्क्रीन पर नक्शा दिखाया गया)। पहले काउंसिल चैंबर

दिखाया जाए, पहले पूरा नक्शा दिखाया जाए। पांचों स्क्रीन पर आना चाहिए। अब काउंसिल हॉल को बड़ा करिए। ये देखिये काउंसिल हॉल पर थोड़ा फोकस करिये, हां इसको बड़ा करिये। मैं आपको बताना चाहता हूं जो ये बीच में ये चैंबर है हमारा, ये हाउस है। ये गैलरी है आगे, ये पोर्च है यानि की मेरी सीट के पीछे का हिस्सा है ये। अब इसके जब हम, जब अध्यक्ष की चेयर से बाहर जाते हैं तो एक तरफ स्पीकर का कमरा है लैफ्टहैंड साइड पर और राइट साइड पर माननीय डिप्टी स्पीकर साहब का कमरा है जो वायसराय का कमरा था इस पर लिखा हुआ है। हर कमरे पर टॉयलेट तक पर लिखा हुआ है कि ये टॉयलेट है और उसमें कितनी सीट हैं वो भी बनाई हुई हैं। अब आप आइये इधर, ये जब आप एमएलए लॉज–2 से बाहर निकलते हैं, मैं कुलवंत राणा जी कह रहे थे आपने कल भी बताया, मैं और स्पष्ट कर दूं, वो अब इस एमएलए लॉज टू से बाहर निकलते हैं तो ये वरांड़ा, ये दो वरांड़े है ये स्पीकर के कमरे के आगे से जाता है। ये डिप्टी स्पीकर के कमरे के आगे से जा रहा है। अब लैफट में आइये डिप्टी स्पीकर के कमरे वाले वरांडे पर आइये, अब आइये ये टक्कर में जाकर ये टिफिन रूम पर, टिफिन रूम को फोकस करिये, ये बस रूक जाइये, टिफिन रूम को फोकस करिये। ये, इस पर लिखा है टिफिन रूम और ये लिफ्ट। अब आइये इसके lavatory पर आइये नीचे, ये देखिये lavatory पर lavatory लिखा हुआ है और इंडिया और इंग्लिश ये भी लिखा हुआ है, कौन सी इंग्लिश होगी, कौन सी इंडियन होगी। ये क्लॉक रूम है, ये स्मोकिंग रूम है, आगे बढ़िए ये राइटिंग रूम है। अब मंत्रियों के कमरे दिखाइये। ये वायसराय रूम है। अब आइये एजुकेशन मंत्री का सैक्टर। ये देखिये ये है कमेटी ऑन एजुकेशन, कमेटी रूम । फिर ये ऑनरेबल मैंबर यानि की मैंबर एजुकेशन, फिर फाइनेंस पर आइये जो हमारी मुख्यमंत्री जी हैं, ये देखिये फाइनेंस, ये फाइनेंस का। इसी तरह अब स्पीकर की तरफ आइये। एक–एक चीज क्रिस्टल क्लीयर है, ये 1912 का नक्शा है। नेशनल आर्काइव ने दिल्ली असेंबली को फोरमल वे में दिया है, रिकोर्ड पर है और ये सेम इसमें से निकलिए, इसको इधर करिये एंड में आइये एंड में, हां स्पीकर के कमरे के वरांडे से आगे बढ़िए ये दोनों 90 के एंगल पर हैं, ये थोड़ा उधर आइये और आगे बिल्कुल लास्ट में आ जाइये, ये देखिये ये लिफ्ट लिखा है और ये ऊपर टिफिन रूम

लिखा है। अब आप बताइये कि दूध का दूध और पानी का पानी है। बिल्डिंग की एक–एक इंच से इंच जगह के बारे में पूरा प्लान करके यहां पर बनाया गया। 8 महीने में ये 4 लाख यूएस डॉलर से ये बिल्डिंग बनी है। 8 महीने में सेठ फकीर चंद इसके कॉन्ट्रैक्टर थे और इसके जो आर्किटैक्ट थे वो बहुत माने हुए और बहुत ही उच्चकोटी के मिस्टर थोमस वो इसके आर्किटेक्ट थे। 1911 में जब किंग जॉर्ज–5 ने बुराड़ी के कोरोनेशन हुआ उनका, ताजपोशी हुई तो 11 दिसम्बर, 1911 को ये घोषणा की कि अब राजधानी कलकत्ता से दिल्ली लाई जा रही है। सैक्रेटरिएट की जरूरत थी, Monte Mirlo Reform आया था उसके अंदर पहली बार चुने हुए प्रतिनिधियों को यहां पर बैठने का मौका मिला और इसलिए यहां पर बहुत बड़ी संख्या में हिंदुस्तान के फ्रीडम फाइटर चुनकर के आए जिसमें गोपाल कृष्ण गोखले भी थे। मैं आपको अभी सूची दूंगा। यहां पर universalization of education पर किस तरह से प्राइवेट मैंबर रैजूलेशनस लाए गए, किसी तरह मदन मोहन मालवीय महामना की 200 स्पीचिज हैं इन्हीं बैंचिज पर जो आवाज आज भी हम सुन सकते हैं, 200 स्पीचिज, पूरा सैट 200 स्पीचिज का महामना मदन मोहन मालवीय ट्रस्ट ने दिल्ली असेंबली को डोनेट किया है, गिफ्ट किया है 12 किताबें हैं। देश के प्रधानमंत्री यशस्वी प्रधानमंत्री जी ने जिसका विमोचन किया था, वो सैट भी मैं लाइब्रेरी में रखवाने के लिए मैंने मंगाए हैं, आप पढ़िए। इस लैजिस्लेटिव असेंबली में, लेजिस्लेटिव काउंसिल में किस तरह का इतिहास है। लेकिन बहुत दुःख की बात है, पूरे इतिहास को बदलने की कोशिश की है। अभी विपक्ष के एक सदस्य कह रहे थे कि 2022 में हुआ तब क्यों नहीं बोले, मुझे अभी इतनी तकलीफ क्यों हो रही है, उसका कारण है। 22 में मैंने भी समझ लिया था कि हो सकता है फांसीघर हो, मेरी भी भावनाएं जुड़ती थी जब मैं उसके आगे से निकलता था लेकिन जब मुझे सच पता लगा स्पीकर की कुर्सी पर बैठने के बाद जब तथ्य मेरे सामने आने लगे तो मुझे ऐसा लगा मुझे किसी ने चीट किया है, धोखा दिया गया है, मेरी भावनाओं से खिलवाड़ किया गया है। आज कितने हजारों–लाखों लोग यहां पर आए होंगे जिन्होंने अपना श्रद्धा से सिर यहां झुकाया होगा कि ये शहीदों की चिताएं हैं ये। लेकिन पता लगा ये तो धोखा है। अब धोखे को और आगे बढ़ाने की बात कर रहे हैं, ये इनकी फितरत है। माननीय

सदस्यगण आई.जी.एन.सी.ए, इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च, National Archive , दिल्ली यूनिवर्सिटी के हिस्टोरियंस, जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी के हिस्टोरियंस, फ्री लांसर हिस्टोरियंस। यहां तक कि म्यूनिसिपल कोर्पोरेशन की हैरिटेज सैल तमाम लोगों की बैठक यहां पर हुई थी जिन्होंने एक सुर में कहा कि इस धोखे को हटाइये। नैशनल आर्काइव ने नक्शा पेश किया। आज उसकी वकालत कर रहे हैं ये लोग, कितने दु:ख की बात है। अरे कह देते गलती हो गई, कल कहा तो था गलती हो गई वापस ले लेंगे, मान जाते। लेकिन झूठ बोलो, गुमराह करो और लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ करो। इस मामले पर हम कल फैसला लेंगे यहां और अब ये सदन की कार्यवाही कल 2 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(सदन की कार्यवाही बृहस्पतिवार दिनांक 07 अगस्त, 2025 दोपहर 2 बजे तक के लिए स्थगित की गई।)

....